वर्ष-1 , अंक-8 | बेंगलुरु, बुधवार , 26 अगस्त 2026 | RNI NO:KNHIN/26/A5540 | Contact:news@bhaarataarth.com | पृष्ठ - 4 ,मूल्य - 5 रुपए

दैनिक समाचार पत्र
भारतार्थ खबर
ख़बर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

प्रदर्शन से पहले 10 सवालों पर पुलिस की नजर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 25 अगस्त 2026। जंतर-मंतर पर 20 जुलाई को छात्रों के प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसक झड़प के बाद दिल्ली पुलिस ने अपनी खुफिया व्यवस्था की समीक्षा करते हुए बड़े प्रदर्शनों को लेकर रणनीति में बदलाव करने का निर्णय लिया है। सूत्रों के अनुसार, पुलिस की स्पेशल ब्रांच को अब किसी बड़े या प्रस्तावित प्रदर्शन से पहले कम से कम 10 महत्वपूर्ण जानकारियां जुटाने और उनका विस्तृत विश्लेषण करने के निर्देश दिए गए हैं।

जंतर-मंतर की घटना के बाद समीक्षा

20 जुलाई को जंतर-मंतर और आसपास के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में छात्र और युवा एकत्र हुए थे। पेपर लीक के मुद्दे और शिक्षा व्यवस्था में सुधार की मांग को लेकर प्रदर्शनकारियों ने संसद की ओर मार्च करने का प्रयास किया। इस दौरान स्थिति बिगड़ने पर पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प हुई तथा पुलिस को भीड़ को नियंत्रित करने के लिए बल प्रयोग करना पड़ा।

घटना के बाद पुलिस की कार्रवाई को लेकर सवाल भी उठे। इसके मद्देनजर दिल्ली पुलिस ने प्रदर्शन से पहले मिलने वाले खुफिया इनपुट और कानून-व्यवस्था की तैयारियों की समीक्षा की।

अब किन जानकारियों पर रहेगा जोर

सूत्रों के मुताबिक नई व्यवस्था के तहत स्पेशल ब्रांच को केवल प्रदर्शन की तारीख, स्थान और संभावित भीड़ का अनुमान लगाने तक सीमित नहीं रखा जाएगा। प्रदर्शन की व्यापक पृष्ठभूमि और आयोजन से जुड़े विभिन्न पहलुओं का आकलन करने पर जोर रहेगा।

पुलिस यह समझने का प्रयास करेगी कि प्रदर्शन में कौन-कौन से समूह शामिल हो सकते हैं, प्रदर्शनकारियों की अनुमानित संख्या कितनी है, वे किन राज्यों या क्षेत्रों से आ रहे हैं और उन्हें संगठित करने में किन आयोजकों या नेताओं की भूमिका है।

इसके साथ ही प्रदर्शन का उद्देश्य, प्रमुख मांगें और आयोजन से जुड़े संगठनों के बीच संभावित समन्वय की जानकारी भी पहले से जुटाने पर जोर दिया जाएगा।

ठहरने और आवाजाही की भी जानकारी

नई रणनीति में प्रदर्शनकारियों के दिल्ली पहुंचने के बाद उनकी संभावित आवाजाही और ठहरने की व्यवस्था से संबंधित जानकारी को भी कानून-व्यवस्था के आकलन का हिस्सा बनाया गया है। पुलिस यह पता लगाने का प्रयास करेगी कि बड़ी संख्या में आने वाले प्रदर्शनकारियों की स्थानीय स्तर पर किस प्रकार की व्यवस्थाएं हैं और किन संगठनों या समूहों के साथ उनका संपर्क है।

इसके अलावा आयोजन की लॉजिस्टिक तैयारियों तथा संभावित वित्तीय स्त्रोतों से संबंधित सूचनाओं का भी विश्लेषण किए जाने की बात सामने आई है। हालांकि इन सभी पहलुओं की जांच का उद्देश्य कानून-व्यवस्था से जुड़े संभावित जोखिमों का पूर्व आकलन करना बताया गया है।

वायरलेस संचार व्यवस्था पर भी जोर

पुलिस कमिश्नर की ओर से वायरलेस संचार व्यवस्था को मजबूत करने के निर्देश दिए जाने की भी जानकारी है। बड़े प्रदर्शनों के दौरान मौके पर तैनात पुलिसकर्मियों और वरिष्ठ अधिकारियों के बीच सूचनाओं का तेजी से आदान-प्रदान हो, इसके लिए वायरलेस नेटवर्क की समीक्षा और तकनीकी कमियों को समय रहते दूर करने पर जोर दिया गया है।

उद्देश्य कानून-व्यवस्था का बेहतर प्रबंधन

पुलिस सूत्रों के अनुसार नई व्यवस्था का उद्देश्य शांतिपूर्ण प्रदर्शन के अधिकार को रोकना नहीं, बल्कि बड़े सार्वजनिक आयोजनों के दौरान संभावित कानून-व्यवस्था संबंधी परिस्थितियों का पहले से बेहतर आकलन करना है। खासतौर पर ऐसे प्रदर्शनों को लेकर अतिरिक्त तैयारी की जाएगी, जिनमें दिल्ली के बाहर से बड़ी संख्या में लोग आने की संभावना हो या कई संगठन एक साथ भाग ले रहे हों।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में शांतिपूर्ण प्रदर्शन नागरिकों की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम है। ऐसे में पुलिस के लिए चुनौती यह होगी कि सुरक्षा और कानून-व्यवस्था की तैयारियों के साथ शांतिपूर्ण सभा एवं प्रदर्शन के अधिकार के बीच संतुलन भी बनाए रखा जाए। नई रणनीति की प्रभावशीलता इस बात से तय होगी कि खुफिया सूचनाओं का इस्तेमाल कितनी सटीकता, पारदर्शिता और कानून के दायरे में किया जाता है।

रोजगार पर खरगे का मोदी सरकार पर हमला

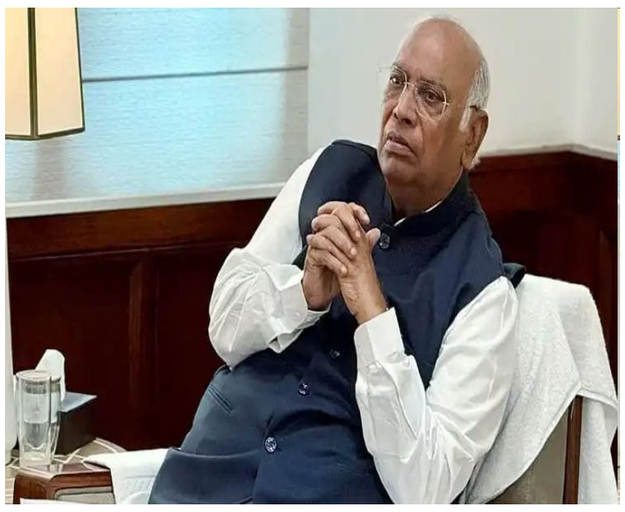

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 25 अगस्त 2026। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार को केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर युवाओं के लिए शिक्षा से रोजगार तक के अवसरों को लेकर गंभीर सवाल उठाए। खरगे ने आरोप लगाया कि सरकारी नीतियों के कारण युवाओं के सामने रोजगार की चुनौती बढ़ी है और एक पूरी पीढ़ी का भविष्य प्रभावित हो रहा है।

खरगे ने सोशल मीडिया मंच ह्यएक्सह्ल पर एक पोस्ट में नीति आयोग के आंकड़ों का हवाला देते हुए दावा किया कि 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग के करीब 8.7 करोड़ युवा न तो शिक्षा में हैं, न रोजगार में और न ही किसी प्रशिक्षण से जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि इनमें करीब 88 प्रतिशत युवा घरेलू कार्यों में लगे हैं। नीति आयोग के उपलब्ध दस्तावेजों में भी 15-29 वर्ष के युवाओं को ह्यनॉट इन एजुकेशन, एम्प्लॉयमेंट एंड ट्रेनिंगह्ल (ठएएळ) श्रेणी में शामिल किया गया है और करीब 88 प्रतिशत के घरेलू कार्यों में लगे होने का उल्लेख है।

बेरोजगारी के आंकड़ों का हवाला

खरगे ने जुलाई 2026 के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (ढछत्र्र) का हवाला देते हुए कहा कि 15 से 29 वर्ष के युवाओं में बेरोजगारी दर 15.6 प्रतिशत रही, जबकि युवा महिलाओं में यह दर 19.5 प्रतिशत थी। सरकारी ढछत्र्र आंकड़ों के अनुसार भी जुलाई में 15-29 वर्ष आयु वर्ग की बेरोजगारी दर 15.6 प्रतिशत और युवा महिलाओं की बेरोजगारी दर 19.5 प्रतिशत दर्ज की गई।

हालांकि, इसी सरकारी सर्वेक्षण के अनुसार जुलाई 2026 में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों की समग्र बेरोजगारी दर 5.1 प्रतिशत रही, जो जून के 5.5 प्रतिशत से कम थी। इससे संकेत मिलता है कि खरगे द्वारा उठाया गया मुद्दा विशेष रूप से युवा रोजगार की स्थिति पर केंद्रित है।

स्नातकों के रोजगार पर सवाल

खरगे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से सवाल किया कि स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद युवाओं के लिए पर्याप्त रोजगार के अवसर कहां हैं। उन्होंने दावा किया कि 20 से 29 वर्ष आयु वर्ग के बेरोजगारों में स्नातकों की हिस्सेदारी 67 प्रतिशत है, जबकि 15 से 25 वर्ष आयु वर्ग के स्नातकों में बेरोजगारी करीब 40 प्रतिशत है।

कांग्रेस अध्यक्ष ने शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ते अंतर, भर्ती प्रक्रिया में देरी तथा युवाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण रोजगार की उपलब्धता जैसे मुद्दों को भी उठाया। उन्होंने केंद्र सरकार से युवाओं के लिए रोजगार सृजन और शिक्षा के बाद बेहतर अवसर सुनिश्चित करने को लेकर जवाब मांगा।

युवाओं को लोकतांत्रिक संस्थाओं से जुड़ने का आह्वान

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 25 अगस्त 2026। दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने युवाओं से लोकतांत्रिक संस्थाओं, प्रक्रियाओं और विचारों से सक्रिय रूप से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मजबूत और जीवंत लोकतंत्र का आधार जागरूक, सूचित और सक्रिय युवा पीढ़ी है।

विजेंद्र गुप्ता मंगलवार को दिल्ली विधानसभा में किरोड़ी मल कॉलेज और रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे। यह संवादात्मक सत्र दिल्ली विधानसभा सचिवालय की युवा संपर्क पहल के तहत आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं और शासन-व्यवस्था के बीच की दूरी कम करना तथा नई पीढ़ी को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की व्यावहारिक जानकारी देना था।

लोकतंत्र में युवाओं की सक्रिय भागीदारी जरूरी

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि आज की जेन-जी डिजिटल रूप से जुड़ी और सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक पीढ़ी है। युवाओं की ऊर्जा, जिज्ञासा और विचारों को यदि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा जाए, तो उन्हें जिम्मेदार और सक्रिय नागरिक भागीदारी की दिशा में आगे बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र केवल मतदान तक सीमित व्यवस्था नहीं है। इसके लिए नागरिकों को शासन की कार्यप्रणाली, विधायी संस्थाओं और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को समझना भी आवश्यक है। युवाओं को इन संस्थाओं से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ना लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति उनकी समझ और जिम्मेदारी को मजबूत कर सकता है।

विद्यार्थियों ने जाना विधानसभा का इतिहास

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को दिल्ली विधानसभा की संसदीय विरासत और ऐतिहासिक महत्व से परिचित कराया गया। उन्हें ऐतिहासिक विधानसभा भवन के बारे में जानकारी दी गई, जिसका निर्माण वर्ष 1912 में हुआ था। यह भवन पूर्व में केंद्रीय विधान सभा के सदन के रूप में भी उपयोग किया गया था और स्वतंत्रता आंदोलन तथा भारतीय संसदीय इतिहास से जुड़ी कई महत्वपूर्ण स्मृतियों को संजोए हुए है।

विद्यार्थियों को श्री विट्ठलभाई पटेल सहित उन महान व्यक्तित्वों की विरासत से भी अवगत कराया गया, जिनका संबंध इस ऐतिहासिक भवन और भारतीय विधायी परंपरा से रहा है। इसके अलावा विद्यार्थियों को वर्ष 1993 में पुनर्गठित दिल्ली विधानसभा की लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में भूमिका और उसके विकासक्रम की जानकारी दी गई।

कानून बनने की प्रक्रिया समझी

कार्यक्रम में विद्यार्थियों के लिए विधायी प्रक्रिया पर एक परिचयात्मक सत्र भी आयोजित किया गया। इसमें उन्हें बताया गया कि कानून बनाने की प्रक्रिया किस प्रकार आगे बढ़ती है, प्रस्तावित कानूनों पर सदन में चर्चा और विचार-विमर्श कैसे होता है तथा विभिन्न चरणों से गुजरने के बाद विधेयक किस प्रकार पारित किया जाता है।

इस अनुभवात्मक संवाद के माध्यम से विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली को केवल पुस्तकीय जानकारी के रूप में नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से समझने का अवसर मिला।

जागरूक युवा लोकतंत्र की ताकत

विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि लोकतांत्रिक समाज की मजबूती जागरूक और जिम्मेदार नागरिकों पर निर्भर करती है। युवा जब लोकतांत्रिक संस्थाओं को करीब से समझते हैं और उनकी कार्यप्रणाली को देखते हैं, तो उनमें नागरिक जिम्मेदारी, जवाबदेही और जनसेवा की भावना और मजबूत हो सकती है। उन्होंने युवाओं से लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति अपनी जिज्ञासा को सकारात्मक दिशा देने तथा देश के भविष्य के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का संदेश दिया। कार्यक्रम का मूल उद्देश्य युवाओं को लोकतंत्र की संस्थागत संरचना से परिचित कराने के साथ उन्हें यह समझाना रहा कि देश की शासन व्यवस्था में नागरिकों की भूमिका केवल दर्शक की नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदार की भी है। ऐसे संवाद युवाओं और लोकतांत्रिक संस्थाओं के बीच संवाद की नई संभावनाएं पैदा कर सकते हैं।

एच1एन1 पर सरकार की नजर, घबराने की जरूरत नहीं: आईसीएमआर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 25 अगस्त 2026। देश में मौसमी इन्फ्लुएंजा के मामलों के बीच केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर), भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) और राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) स्थिति पर लगातार निगरानी रख रहे हैं। आईसीएमआर के महानिदेशक एवं डीएचआर सचिव डॉ. राजीव बहल ने कहा है कि वर्तमान स्थिति को लेकर लोगों को घबराने की आवश्यकता नहीं है। डॉ. बहल के अनुसार, देश में सामने आ रहे इन्फ्लुएंजा वायरस हाल के वर्षों में देखे गए मौसमी संक्रमण के पैटर्न के अनुरूप हैं। वायरस की स्थिति और उसके संभावित बदलावों पर नजर रखने के लिए डीएचआर-आईसीएमआर के 73 वायरस रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक लैबोरेटरीज के नेटवर्क के माध्यम से जीनोमिक और महामारी संबंधी निगरानी की जा रही है।

एच1एन1 में सामान्य मौसमी बदलाव

निगरानी के दौरान भारत में प्रसारित हो रहे एच1एन1 वायरस की पहचान ए/मिसौरी/11/2025 पीडीएम09-जैसे वायरस के रूप में की गई है। इसके हेमाग्लुटिनिन जीन के विश्लेषण के आधार पर इसे क्लेड 6बी.1ए.5ए2ए और सबक्लेड डी.3.1.1 में रखा गया है।

डॉ. राजीव बहल के मुताबिक, वायरस की यह वंशावली वर्ष 2025 से भारत में लगातार प्रसारित हो रही है। वायरस में देखे गए आनुवंशिक परिवर्तन सामान्य मौसमी बदलाव हैं, जिन्हें वैज्ञानिक भाषा में एंटीजेनिक ड्रिफ्ट कहा जाता है। मौजूदा जानकारी के आधार पर इन बदलावों से किसी नए या अधिक खतरनाक वायरस के उभरने का संकेत नहीं मिला है।

अधिकांश मामलों में लक्षण हल्के

स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार मौसमी इन्फ्लुएंजा, जिसमें एच1एन1 भी शामिल है, स्वस्थ व्यक्तियों में आमतौर पर हल्का और स्व-सीमित संक्रमण होता है। इसके सामान्य लक्षणों में बुखार, खांसी, गले में खराश, सिरदर्द, शरीर में दर्द और थकान शामिल हैं।

डॉ. बहल ने स्पष्ट किया कि एच1एन1 संक्रमित होने का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति को गंभीर बीमारी होगी या अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता पड़ेगी। पर्याप्त आराम, उचित देखभाल और शरीर में पानी की पर्याप्त मात्रा बनाए रखना सामान्य मामलों में स्वास्थ्य सुधार में सहायक हो सकता है।

बुजुर्गों और बच्चों को अधिक सावधानी

हालांकि, स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार बुजुर्गों, छोटे बच्चों, पहले से किसी बीमारी से पीड़ित लोगों तथा कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले व्यक्तियों में इन्फ्लुएंजा से जटिलताओं का जोखिम अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है। ऐसे लोगों में फ्लू जैसे लक्षण दिखाई देने पर समय पर चिकित्सकीय सलाह लेना उचित है।

सरकार ने लोगों से संक्रमण से बचाव के लिए सामान्य सावधानियां अपनाने की अपील की है। खांसते या छींकते समय मुंह और नाक ढंकने, नियमित रूप से हाथ धोने, बीमार होने पर घर पर आराम करने तथा पर्याप्त मात्रा में पानी पीने की सलाह दी गई है।

बिना सलाह दवा लेने से बचें

स्वास्थ्य विभाग ने लोगों को बिना चिकित्सकीय सलाह के एंटीवायरल या एंटीबायोटिक दवाओं का सेवन नहीं करने की सलाह दी है। विशेष रूप से एंटीबायोटिक दवाएं वायरस से होने वाले इन्फ्लुएंजा संक्रमण का सामान्य उपचार नहीं हैं। लक्षणों की गंभीरता और व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति के आधार पर चिकित्सक ही उचित उपचार तय कर सकते हैं।

निगरानी रहेगी जारी

सरकार इन्फ्लुएंजा की गतिविधि, वायरस के प्रकार और बीमारी की गंभीरता में होने वाले संभावित बदलावों पर लगातार नजर बनाए रखेगी। उपलब्ध मौजूदा साक्ष्यों के आधार पर वायरस के व्यवहार में किसी असामान्य परिवर्तन या नई स्ट्रेन के उभरने के संकेत नहीं मिले हैं। ऐसे में विशेषज्ञों का संदेश स्पष्ट है–सावधानी जरूरी है, लेकिन अनावश्यक भय की आवश्यकता नहीं। सामान्य स्वच्छता, पर्याप्त आराम और बीमारी के लक्षणों को गंभीरता से लेना संक्रमण से बचाव और समय पर उपचार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

अयोध्या चढ़ावा विवाद: FIR की मांग फिर उठी

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

अयोध्या, 25 अगस्त 2026।अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में चढ़ावे से जुड़ी कथित अनियमितताओं का विवाद एक बार फिर सुर्खियों में है। फैजाबाद बार एसोसिएशन ने राम मंदिर ट्रस्ट के पूर्व महासचिव चंपत राय, पूर्व ट्रस्टी अनिल मिश्रा और मंदिर से जुड़े अधिकारी गोपाल राव के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग दोहराई है। एसोसिएशन ने चेतावनी दी है कि पुलिस द्वारा शिकायत पर कार्रवाई नहीं किए जाने की स्थिति में अधिवक्ता आंदोलन का रास्ता अपना सकते हैं। बार एसोसिएशन का आरोप

है कि मंदिर में चढ़ावे से संबंधित कथित चोरी और अनियमितताओं की जांच के दौरान उक्त तीनों की भूमिका की भी कानूनी जांच होनी चाहिए। एसोसिएशन की ओर से इस संबंध में पुलिस को शिकायत दिए जाने और त्र्क्षक्ष दर्ज करने की मांग पहले भी की जा चुकी है। मामले में जांच पहले से जारी श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में चढ़ावे से जुड़े कथित अनियमितताओं के प्रकरण में पुलिस स्तर पर जांच और कार्रवाई पहले से चल रही है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार मामले में कुछ लोगों की गिरफ्तारी भी हुई है। जांच के दौरान चंपत राय, अनिल मिश्रा और गोपाल राव से पूछताछ किए जाने की जानकारी भी सामने आई थी। रुळ रिपोर्ट को लेकर अलग तस्वीर मामले का एक महत्वपूर्ण पहलू रुळ की अंतिम रिपोर्ट से जुड़ा है। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार उत्तर प्रदेश सरकार के गृह विभाग को सौंपी गई रुळ रिपोर्ट में चंपत राय और अनिल मिश्रा के खिलाफ कथित प्रकरण में संलिप्तता नहीं पाए जाने की बात सामने आई है। रिपोर्ट में उन्हें आरोपी के तौर पर शामिल नहीं किए जाने की जानकारी भी सामने आई है। ऐसे में मौजूदा स्थिति में चंपत राय, अनिल मिश्रा या गोपाल राव को इस मामले में दोषी बताना तथ्यात्मक रूप से उचित नहीं होगा।

बिहार में बाढ़ की स्थिति का मुख्यमंत्री ने लिया जायजा, प्रभावित इलाकों का हवाई सर्वेक्षण

भारतार्थ खबर संवाददाता अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

पटना, 25 अगस्त 2026। बिहार के कई जिलों में गंगा और उसकी सहायक नदियों के बढ़ते जलस्तर के बीच बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी हुई है। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने सोमवार को बाढ़ प्रभावित और संवेदनशील क्षेत्रों का हवाई सर्वेक्षण कर स्थिति का जायजा लिया। इस दौरान निचले इलाकों, दियारा क्षेत्रों और जलमग्न क्षेत्रों की स्थिति का निरीक्षण किया गया। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार सर्वेक्षण के दौरान नवगछिया-राघोपुर दियारा, कोसी-गंगा संगम क्षेत्र, बेगूसराय और बख्तियारपुर समेत कई इलाकों की स्थिति देखी गई।

बिहार में लगातार बारिश और नदियों के बढ़ते जलस्तर के कारण कई इलाकों में जनजीवन प्रभावित हुआ है। जल संसाधन विभाग के उपलब्ध आंकड़ों में पटना, भागलपुर, खगड़िया और कटिहार सहित कई स्थानों पर नदियों का जलस्तर चेतावनी या खतरे के स्तर के आसपास अथवा उससे ऊपर दर्ज किया गया है।

भागलपुर जिले में बाढ़ की स्थिति के बीच काजीकोरैया-राघोपुर मार्जिनल तटबंध का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त होने की सूचना भी सामने आई है। प्रशासन और संबंधित विभागों की ओर से स्थिति पर निगरानी रखते हुए राहत एवं बचाव कार्य किए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने प्रभावित क्षेत्रों में प्रशासन को पूरी तत्परता के साथ राहत और बचाव कार्य चलाने तथा लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए हैं। संवेदनशील क्षेत्रों में जलस्तर की लगातार निगरानी, जरूरतमंद लोगों तक आवश्यक सहायता पहुंचाने और आपात स्थिति में तत्काल कार्रवाई पर जोर दिया गया है।

बाढ़ की स्थिति को देखते हुए स्थानीय प्रशासन द्वारा प्रभावित और निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी जा रही है। राहत शिविरों, भोजन, पेयजल और आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रशासनिक स्तर पर प्रयास जारी हैं।

बिहार में बाढ़ की स्थिति जिले-दर-जिले अलग-अलग है। इसलिए किसी एक क्षेत्र की स्थिति के आधार पर पूरे राज्य की स्थिति का आकलन करना उचित नहीं होगा। प्रशासन और जल संसाधन विभाग द्वारा नदियों के जलस्तर तथा तटबंधों की स्थिति पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा के दौरान प्रशासन के साथ आम नागरिकों की सतर्कता भी महत्वपूर्ण है। लोगों से अपील है कि वे अफवाहों पर ध्यान न दें, प्रशासन द्वारा जारी निर्देशों का पालन करें और जरूरत पड़ने पर सुरक्षित स्थानों की ओर जाने में सहयोग करें।

सेनापति में गोलीबारी और आगजनी से तनाव, CRPF जवान घायल

भारतार्थ खबर संवाददाता अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

सेनापति, 25 अगस्त 2026 ।मणिपुर के सेनापति जिले में सोमवार को गोलीबारी और आगजनी की घटनाओं के बाद इलाके में तनाव की स्थिति बन गई। घटनाक्रम के दौरान केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (उपद्धत्र) का एक जवान गोली लगने से घायल हो गया। उसे उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहां उसकी स्थिति खतरे से बाहर बताई गई।

स्थानीय स्तर पर मिली जानकारी के अनुसार, ताफू और आसपास के क्षेत्रों में दो पक्षों के बीच विवाद के बाद गोलीबारी हुई। इसी दौरान कुछ मकानों में आग लगाए जाने की घटनाएं भी सामने आईं। आगजनी के कारण क्षेत्र में भय और तनाव का माहौल बन गया।

घटना की सूचना मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने इलाके में पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया। संवेदनशील स्थानों पर सुरक्षा बढ़ाई गई है और हालात पर नजर रखी जा रही है। प्रशासन की प्राथमिकता हिंसा को आगे फैलने से रोकना और सामान्य स्थिति बहाल करना है।

घटना से नाराज स्थानीय लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान राष्ट्रीय राजमार्ग-2 पर यातायात बाधित हुआ। प्रदर्शनकारियों ने आगजनी और गोलीबारी की घटनाओं के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। सुरक्षा व्यवस्था के बीच मार्ग को सामान्य करने के प्रयास किए गए।

अधिकारियों की ओर से घटना के कारणों और हिंसा में शामिल लोगों की भूमिका की जांच की जा रही है। फिलहाल किसी व्यक्ति या समूह को घटना के लिए जिम्मेदार ठहराने से पहले जांच पूरी होना जरूरी है। प्रशासन ने लोगों से शांति बनाए रखने और अफवाहों पर भरोसा नहीं करने की अपील की है।

मणिपुर में पिछले कुछ समय से विभिन्न समुदायों के बीच तनाव की घटनाएं सामने आती रही हैं। ऐसे में सेनापति की घटना को लेकर सुरक्षा एजेंसियां अतिरिक्त सतर्कता बरत रही हैं। स्थिति पर लगातार निगरानी रखी जा रही है।

पहला सुख निरोगी काया, सफलता से पहले स्वास्थ्य

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में मायाह्व–यह कहावत भारतीय जीवन-दर्शन में स्वास्थ्य के महत्व को बहुत सरल शब्दों में समझाती है। आज की तेज रफ्तार जिंदगी में आर्थिक सफलता, बड़ा कारोबार, आलीशान घर और सुविधाओं की चाह ने मनुष्य को इतना व्यस्त कर दिया है कि वह उस शरीर की अनदेखी कर रहा है, जिसके सहारे वह यह सब हासिल करना चाहता है। सवाल यह है कि यदि मंजिल मिल भी जाए, लेकिन उसे भोगने वाला शरीर स्वस्थ न रहे, तो उस सफलता का अर्थ क्या है?

एक धनी सेठ की कहानी इस विडंबना को बड़ी मार्मिकता से सामने रखती है। सेठ का लक्ष्य शहर का सबसे अमीर व्यक्ति बनना था। वर्षों तक उन्होंने दिन-रात मेहनत की, धन कमाया और अंततः अपना सपना पूरा कर लिया। उन्होंने करोड़ों रुपये खर्च कर एक शानदार घर बनवाया और गृह प्रवेश के अवसर पर भव्य आयोजन किया। लेकिन उसी रात उन्हें अपने जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई का सामना करना पड़ा।

कहानी में उनकी आत्मा उनसे कहती है कि उसने जिस शरीर में वर्षों तक निवास किया, उसकी देखभाल स्वयं सेठ ने नहीं की। करोड़ों रुपये के मकान की मजबूती का ध्यान रखा गया, लेकिन शरीर के स्वास्थ्य की नींव कमजोर होती चली गई। धन और सुविधाएं बढ़ती रहीं, लेकिन तनाव, अनियमित जीवनशैली, खान-पान की लापरवाही और शारीरिक निष्क्रियता ने शरीर को बीमारियों से घेर लिया।

कहानी का संदेश काल्पनिक हो सकता है, लेकिन उसके पीछे छिपी चिंता आज के समाज की वास्तविकता है। आधुनिक जीवन में लोग काम के दबाव, लंबे समय तक बैठकर काम करने, अनियमित भोजन, अपर्याप्त नींद और तनाव के बीच स्वास्थ्य को अक्सर भविष्य के लिए टाल देते हैं। ह्वअभी काम जरूरी है, स्वास्थ्य बाद में देखेंगेह्व–यह सोच धीरे-धीरे गंभीर समस्या का रूप ले सकती है।

स्वास्थ्य को केवल बीमारी न होने की स्थिति मानना भी उचित नहीं है। स्वस्थ शरीर के साथ मानसिक शांति, पर्याप्त नींद, संतुलित भोजन, नियमित शारीरिक गतिविधि और तनाव पर नियंत्रण भी आवश्यक हैं। शरीर को एक घर की तरह समझें। जैसे मकान की समय-समय पर सफाई, मरम्मत और देखभाल जरूरी है, वैसे ही शरीर को भी नियमित देखभाल चाहिए।

आज बहुत से लोग अपने वाहन की सर्विस समय पर कराते हैं, घर की मरम्मत कराते हैं, बीमा करवाते हैं और बैंक खाते की सुरक्षा का ध्यान रखते हैं, लेकिन अपने स्वास्थ्य की नियमित जांच को टालते रहते हैं। यह प्राथमिकताओं का असंतुलन है। शरीर ही वह माध्यम है जिसके जरिए हम परिवार, व्यवसाय, समाज और अपने सपनों के लिए काम करते हैं।

आर्थिक सफलता निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है। धन से परिवार की आवश्यकताएं पूरी होती हैं, शिक्षा और बेहतर जीवन के अवसर मिलते हैं तथा भविष्य सुरक्षित किया जा सकता है। लेकिन धन कमाने की प्रक्रिया यदि स्वास्थ्य को लगातार नुकसान पहुंचाने लगे, तो हमें अपनी प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करना चाहिए। यह भी समझना होगा कि स्वास्थ्य केवल बीमारी आने के बाद अस्पताल जाने का विषय नहीं है। स्वास्थ्य की रक्षा बीमारी से पहले शुरू होती है। संतुलित भोजन, नियमित व्यायाम या योग, पर्याप्त नींद, नशे से दूरी, समय-समय पर स्वास्थ्य जांच और मानसिक तनाव को नियंत्रित करने के प्रयास जीवनशैली का हिस्सा बनने चाहिए। किसी भी व्यक्ति को अपनी उम्र, कार्यप्रणाली और चिकित्सकीय आवश्यकता के अनुसार विशेषज्ञ की सलाह लेकर स्वास्थ्य संबंधी कदम उठाने चाहिए।

सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जब शरीर संकेत देने लगता है, तब भी हम उन्हें नजरअंदाज करते रहते हैं। लगातार थकान, नींद में परेशानी, बढ़ता वजन, तनाव या अन्य शारीरिक समस्याओं को सामान्य मानकर टालना भविष्य में भारी पड़ सकता है। समय रहते सावधानी बरतना उपचार की आवश्यकता को कम करने में मदद कर सकता है। समाज के स्तर पर भी स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। कार्यस्थलों पर स्वस्थ वातावरण, परिवार में संतुलित जीवनशैली और बच्चों में बचपन से ही खेल एवं शारीरिक गतिविधियों की आदत को बढ़ावा देना जरूरी है। स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज की नींव रख सकता है।

सेठ की कहानी हमें एक सीधा सवाल देती है–हम किसके लिए दौड़ रहे हैं? यदि धन, पद और प्रतिष्ठा हासिल करने की पूरी यात्रा में हमारा स्वास्थ्य ही पीछे छूट जाए, तो मंजिल पर पहुंचकर खुशी कितनी देर टिकेगी?

जीवन में धन कमाइए, सफलता हासिल कीजिए, बड़ा घर बनाइए और अपने सपनों को पूरा कीजिए, लेकिन अपने शरीर को उन सपनों की कीमत मत बनाइए। क्योंकि संपत्ति दोबारा कमाई जा सकती है, लेकिन बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य वापस पाना हमेशा आसान नहीं होता।

सच्ची सफलता वही है जिसमें धन के साथ स्वास्थ्य, उपलब्धियों के साथ मानसिक शांति और सुविधाओं के साथ जीवन का आनंद भी सुरक्षित रहे।

इसलिए आज से एक संकल्प जरूरी है–काम के लिए जीवन नहीं, बल्कि बेहतर जीवन के लिए संतुलित काम। अपने शरीर को समय दें, अपने मन को विश्राम दें और स्वास्थ्य को भविष्य की नहीं, आज की प्राथमिकता बनाएं।

पहला सुख निरोगी काया है। बाकी सुख तभी सार्थक हैं, जब उन्हें महसूस करने के लिए शरीर और मन दोनों स्वस्थ हों।

हर अज्ञातवास के बाद लौटता है अर्जुन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

समय जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। वह दिखाई नहीं देता, लेकिन उसके प्रभाव से परिस्थितियां बदलती रहती हैं। आज जो व्यक्ति संघर्ष में है, जरूरी नहीं कि कल भी उसकी वही स्थिति रहे। इसी सत्य को महाभारत के पांडवों का अज्ञातवास अत्यंत प्रभावशाली ढंग से सामने रखता है। पांडवों को बारह वर्ष के वनवास के बाद एक वर्ष अज्ञातवास में बिताना पड़ा। उस दौरान उन्हें अपनी पहचान छिपाकर सामान्य सेवकों के रूप में जीवन जीना पड़ा। यह प्रसंग केवल धार्मिक कथा नहीं, बल्कि धैर्य, संयम, आत्मविश्वास और सही समय की प्रतीक्षा का बड़ा जीवन-पाठ है।

युधिष्ठिर को कंक के रूप में राजा विराट के दरबार में रहना पड़ा, भीम ने बल्लभ बनकर रसोई का दायित्व संभाला, नकुल और सहदेव ने पशुओं की देखभाल की और द्रौपदी ने सैरंध्री के रूप में सेवा की। अर्जुन ने बृहन्नला का रूप धारण कर राजकुमारी उत्तरा को नृत्य-संगीत की शिक्षा दी। जिन पांडवों का परिचय उनके पराक्रम और राजसी वैभव से था, उन्हें अपनी वास्तविक पहचान छिपानी पड़ी।

यहां सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परिस्थितियां बदलने से उनकी योग्यता समाप्त नहीं हुई। भीम के हाथ में करछी आ गई, लेकिन उसकी शक्ति कम नहीं हुई। अर्जुन ने गांडीव एक ओर रख दिया, लेकिन उसका कौशल समाप्त नहीं हुआ। युधिष्ठिर ने राजसिंहासन खो दिया, लेकिन उनका विवेक और धर्मबोध उनके साथ रहा। यही संदेश आज के जीवन में भी उतना ही प्रासंगिक है।

हम अक्सर किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके वर्तमान पद, कपड़ों, आर्थिक स्थिति या सामाजिक हैसियत से करने लगते हैं। यही हमारी सबसे बड़ी भूल है। किसी साधारण कर्मचारी के भीतर नेतृत्व की क्षमता हो सकती है। किसी छोटे दुकानदार के मन में बड़ा उद्यम खड़ा करने का सपना हो सकता है। कोई मजदूर अपने बच्चों के लिए बेहतर भविष्य बनाने की लड़ाई लड़ रहा हो सकता है। कोई विद्यार्थी असफलताओं से जूझते हुए अपने जीवन की दिशा बदलने की तैयारी कर रहा हो सकता है।

इसलिए किसी के वर्तमान को देखकर उसके भविष्य का फैसला करना उचित नहीं है।

जीवन में ऐसे दौर आते हैं जब योग्य व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप अवसर नहीं मिलता। कभी आर्थिक परिस्थितियां रोकती हैं, कभी परिवार की जिम्मेदारियां, कभी असफलता और कभी परिस्थितियों का दबाव। ऐसे समय को समाप्ति नहीं, तैयारी का काल मानना चाहिए। अज्ञातवास का अर्थ केवल छिप जाना नहीं है; यह अपने भीतर की शक्ति को सुरक्षित रखते हुए सही अवसर की प्रतीक्षा करना भी है।

आज के समाज में हमें इस दृष्टिकोण की विशेष आवश्यकता है। सफलता की दौड़ में हम अक्सर परिणाम को ही प्रतिभा का प्रमाण मान लेते हैं। जो व्यक्ति सफल है, उसे योग्य और जो पीछे है, उसे असफल समझने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। लेकिन इतिहास बताता है कि कई महान उपलब्धियों के पीछे लंबे संघर्ष और उपेक्षा के दौर रहे हैं।

महाभारत का अर्जुन हमें यही सिखाता है कि पहचान का संकट स्थायी नहीं होता। बृहन्नला का रूप परिस्थितियों की मांग था, अर्जुन का वास्तविक स्वरूप नहीं। समय आने पर वही अर्जुन गांडीव लेकर सामने आया। इसलिए जीवन में कठिन दौर आने पर स्वयं को अपनी परिस्थितियों से परिभाषित नहीं करना चाहिए। यह संदेश केवल संघर्ष कर रहे व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए भी है। हमें दूसरों के संघर्ष का सम्मान करना चाहिए। किसी गरीब व्यक्ति का उपहास, छोटे पद पर काम करने वाले का अपमान या किसी असफल व्यक्ति को निराश करना हमारे सामाजिक संस्कारों की कमजोरी है। संभव है, जिसे हम आज साधारण समझ रहे हैं, वही कल किसी परिवार, संस्था या समाज के लिए बड़ी उपलब्धि का कारण बने।

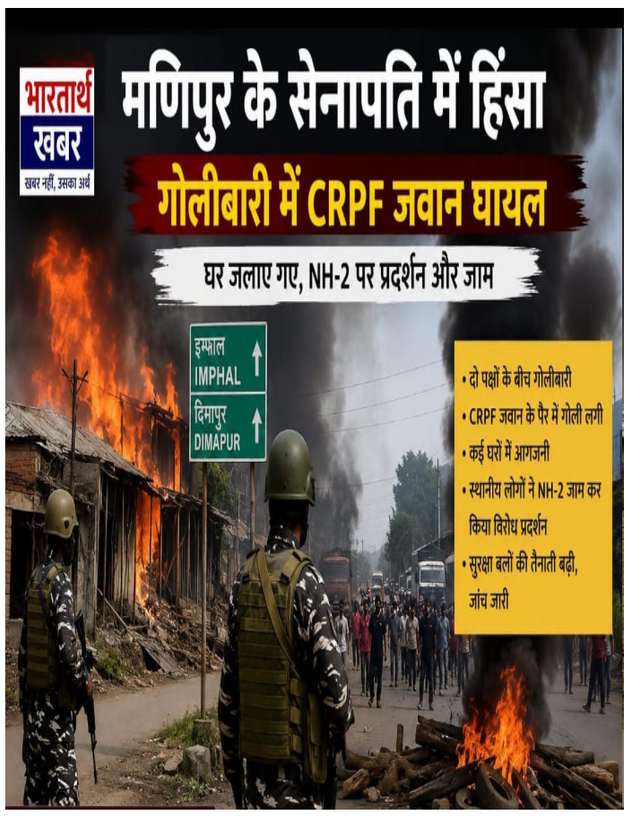

साथ ही सफलता प्राप्त करने वालों के लिए भी यह प्रसंग चेतावनी देता है। समय किसी एक व्यक्ति या वर्ग का स्थायी नहीं होता। आज उपलब्धियां आपके साथ हैं तो विनम्र रहना चाहिए। कल परिस्थितियां बदल सकती हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति आज कठिन दौर से गुजर रहा है, उसे निराश होने के बजाय अपने कर्म और लक्ष्य पर विश्वास बनाए रखना चाहिए।

अज्ञातवास हमें धैर्य का अर्थ भी समझाता है। धैर्य का मतलब निष्क्रिय बैठना नहीं, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में भी अपने कर्तव्य से विचलित न होना है। संघर्ष के दौरान सीखना, स्वयं को बेहतर बनाना और अवसर आने पर पूरी क्षमता से सामने आना ही वास्तविक धैर्य है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम हर संघर्षशील व्यक्ति में केवल उसका वर्तमान न देखें। उसके प्रयास, उसकी परिस्थितियां और उसकी संभावनाएं भी देखें। किसी को यह कहने के बजाय कि ह्वतुमसे कुछ नहीं होगाह्व, हमें कहना चाहिए–ह्वसंभव है, तुम्हारा समय अभी नहीं आया है। समय का चक्र चलता रहता है। सफलता और असफलता, सम्मान और उपेक्षा, सुख और संघर्ष–इनमें से कोई भी स्थिति स्थायी नहीं है। इसलिए कठिन समय में विश्वास बनाए रखना और अच्छे समय में विनम्र रहना ही जीवन की समझदारी है।

हर अज्ञातवास का अंत होता है। हर संघर्ष अपने भीतर एक सीख छिपाए रहता है। और जो व्यक्ति कठिन दौर में भी कर्म, धैर्य और आत्मविश्वास नहीं छोड़ता, उसके जीवन में एक दिन ऐसा अवश्य आता है, जब परिस्थितियां स्वयं उसके पक्ष में खड़ी दिखाई देती हैं। इसलिए किसी व्यक्ति को उसके आज से मत आंकिए। हो सकता है वह आज संघर्ष के दौर में हो, लेकिन उसके भीतर आने वाला कल आकार ले रहा हो। समय बदलेगा, परिस्थितियां बदलेंगी और संभव है कि जिस व्यक्ति को दुनिया आज साधारण समझ रही है, वही कल अपनी कहानी से दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाए।

सूखी जमीन में उम्मीद

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
लेखकः अशोक कुमार सिंह

राजस्थान के एक छोटे से गांव केसरपुर की यह कहानी केवल एक किसान की मेहनत की कहानी नहीं, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में उम्मीद, धैर्य और सामूहिक प्रयास की ताकत का संदेश देती है।

केसरपुर में गोविंद नाम का एक साधारण किसान रहता था। उसके पास थोड़ी जमीन, एक पुराना कुआं और मिट्टी से बना छोटा सा घर था। सीमित साधनों के बावजूद वह मेहनत और धैर्य के साथ जीवन जी रहा था। लेकिन एक वर्ष गांव में बारिश बेहद कम हुई। खेतों में दरारें पड़ गईं, तालाब सूख गया और कुओं का जलस्तर लगातार नीचे जाने लगा।

जल संकट बढ़ा तो गांव के कई परिवारों ने रोजी-रोटी के लिए शहर जाने का निर्णय लेना शुरू कर दिया। गोविंद का पड़ोसी मोहन भी परिवार सहित गांव छोड़ने की तैयारी में था। उसने गोविंद से कहा कि जब खेत और पानी दोनों साथ नहीं हैं तो गांव में रुकने का क्या फायदा। गोविंद ने सूखी मिट्टी को हाथ में लेकर जवाब दिया कि मिट्टी कभी बेकार नहीं होती। कई बार परिस्थितियां इंसान की परीक्षा लेती हैं और उसी परीक्षा से उसकी वास्तविक क्षमता सामने आती है। उसका विश्वास था कि उम्मीद केवल अच्छे हालात में नहीं, बल्कि कठिन समय में हिम्मत बनाए रखने से पैदा होती है।

अगली सुबह गोविंद ने अपने खेत के एक कोने में खुदाई शुरू कर दी। ग्रामीणों ने उसका मजाक उड़ाया। किसी ने इसे व्यर्थ की मेहनत बताया तो किसी ने कहा कि सूखी जमीन में पानी तलाशना असंभव है। लेकिन गोविंद बिना किसी विवाद में पड़े सुबह से शाम तक फावड़ा चलाता रहा। कई दिन बीत गए। पानी का कोई संकेत नहीं मिला। उसका बेटा अर्जुन भी निराश

होकर पिता से काम छोड़ने के लिए कहने लगा। गोविंद ने उसे समझाया कि प्रयास छोड़ने से पहले यह देखना जरूरी है कि हमने पूरी कोशिश की है या केवल कठिनाई देखकर डर गए हैं।

इसके बाद अर्जुन भी पिता के साथ जुट गया। दोनों लगातार खुदाई करते रहे। आखिरकार एक सुबह फावड़े की चोट के साथ मिट्टी का रंग बदला। जमीन की एक परत नम थी। दोनों ने आगे खुदाई की तो धीरे-धीरे पानी रिसता हुआ दिखाई दिया। जलस्रोत बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन इतना जरूर था कि कुछ पौधों और परिवारों की आवश्यकताओं में मदद मिल सके। गोविंद ने इस पानी पर अपना अधिकार जताने के बजाय पूरे गांव को उसका उपयोग करने के लिए आमंत्रित किया।

मोहन भी वहां पहुंचा। उसने गोविंद से अपनी पुरानी बातों के लिए माफी मांगी। गोविंद ने उसे सहजता से कहा कि माफी की जरूरत नहीं है, लेकिन आगे से किसी व्यक्ति की मेहनत का मूल्यांकन उसकी सफलता आने से पहले नहीं करना चाहिए।

इस छोटे से जलस्रोत ने गांव की सोच में बड़ा बदलाव ला दिया। ग्रामीणों ने समझा कि केवल बारिश का इंतजार करना पर्याप्त नहीं है। उन्होंने मिलकर वर्षा जल संरक्षण की दिशा में काम शुरू किया। तालाब की सफाई की गई, जलसंग्रह के लिए गड्ढे बनाए गए, खेतों में मेड़बंदी की गई और पुराने कुओं की सफाई का अभियान शुरू हुआ।

अगली बारिश में ग्रामीणों ने पानी को बहकर बर्बाद होने देने के बजाय उसे खेतों और जलस्रोतों में सहेजा। कुछ महीनों बाद सूखी जमीन पर फिर हरियाली दिखाई देने लगी। जिस गांव से लोग पलायन करने की तैयारी कर रहे थे, वही गांव अपने संसाधनों को बचाने और भविष्य को मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ने लगा।

समय बीतने के साथ गोविंद वृद्ध हो गया, लेकिन उसका बेटा अर्जुन गांव के युवाओं के साथ जल संरक्षण के कार्यों में जुटा रहा। एक दिन गांव के विद्यालय में गोविंद को सम्मानित किया गया। वहां उसने बच्चों से कहा कि जीवन में कभी ऐसा समय आए जब रास्ते बंद दिखाई दें, तो घबराने के बजाय एक कदम आगे बढ़ाना चाहिए। संभव है कि जिस जगह केवल सूखी जमीन दिखाई दे रही हो, वहीं उम्मीद की पहली बूंद छिपी हो। गोविंद की कहानी का सार केवल जमीन के नीचे पानी खोज लेना नहीं है। इसका वास्तविक संदेश यह है कि किसी भी संकट का सामना केवल शिकायतों से नहीं किया जा सकता। समाधान के लिए सामूहिक सोच, निरंतर प्रयास और धैर्य आवश्यक है।

आज जब जल संकट अनेक क्षेत्रों के लिए गंभीर चुनौती बनता जा रहा है, यह कहानी वर्षा जल संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की ओर भी ध्यान आकर्षित करती है। पानी की हर बूंद को बचाना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की साझा जिम्मेदारी है। संदेशः परिस्थितियां कठिन हो सकती हैं, संसाधन सीमित हो सकते हैं और परिणाम देर से मिल सकते हैं, लेकिन निरंतर प्रयास की शक्ति को कम नहीं आंका जा सकता। जहां निराशा अंत दिखाई देती है, वहीं से समाधान की शुरूआत भी संभव है। उम्मीद केवल प्रतीक्षा का नाम नहीं, बल्कि उसे सच करने के लिए उठाया गया पहला कदम है।

मंदिर जाएं, तो आत्मचिंतन भी करें : मुनि वीरसागर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 25 अगस्त 2026। ज्ञानोदय परिसर, तुबरहल्ली, बेंगलुरु में मंगलवार को निर्यापक मुनि श्री 108 वीरसागर जी महाराज ने मंदिर की मयार्दा, धार्मिक आचरण, पूजा की शुचिता और आत्मकल्याण के विषय पर श्रद्धालुओं को चिंतनपरक मार्गदर्शन दिया। ह्लसावधान! मंदिर आकर कहीं पतन तो नहीं हो रहा?ह्व विषय पर हुए प्रवचन में उन्होंने कहा कि केवल मंदिर जाना ही आध्यात्मिक उन्नति की गारंटी नहीं है। मंदिर में पहुंचने के बाद व्यक्ति की भावना, वाणी, व्यवहार और गतिविधियां कैसी हैं, यही उसकी धार्मिक साधना की वास्तविक दिशा तय करती हैं।

निर्यापक मुनि श्री ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफलता और उन्नति चाहता है। यह इच्छा लौकिक जीवन में हो या आध्यात्मिक क्षेत्र में, प्रगति के लिए सबसे पहले उन कारणों को पहचानना और रोकना जरूरी है, जो आगे बढ़ने में बाधक बनते हैं। जैन दर्शन के संदर्भ में उन्होंने आस्रव और बंध को रोकने तथा संवर और निर्जरा की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता समझाई। उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति एक ओर सकारात्मक कार्य करने का प्रयास करता रहे और दूसरी ओर नकारात्मक प्रवृत्तियों के रास्ते खुले छोड़ दे, तो अपेक्षित परिणाम प्राप्त करना कठिन होता है। धार्मिक साधना भी इसी सिद्धांत पर आधारित है। केवल अच्छे कार्य करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन कारणों से बचना भी आवश्यक है, जो आत्मिक पतन की ओर ले जा सकते हैं। धूल भरे कमरे का उदाहरण देकर समझाया प्रवचन में मुनि श्री ने साधना की प्रक्रिया को सरलता से समझाने के लिए धूल से भरे कमरे का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि यदि किसी कमरे में धूल जमा हो गई है तो उसे साफ करने के लिए झाड़ू लगाना जरूरी है, लेकिन यदि खिड़कियां खुली रहें और बाहर से धूल लगातार अंदर आती रहे, तो सफाई का स्थायी परिणाम नहीं मिलेगा। इसी प्रकार जीवन में संवर और निर्जरा के लिए प्रयास करते हुए यदि व्यक्ति आस्रव और बंध के कारणों को रोकने का प्रयास नहीं करता, तो साधना अधूरी रह जाती है। इसलिए धार्मिक जीवन में अच्छे कार्यों के साथ गलत प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखना भी उतना ही आवश्यक है। मंदिर की मयार्दा पर विशेष जोर निर्यापक मुनि श्री ने मंदिर की मयार्दा को प्रवचन का महत्वपूर्ण विषय बनाया। उन्होंने कहा कि जिनालय में दर्शन, अभिषेक और पूजन धार्मिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं, लेकिन इन धार्मिक क्रियाओं के साथ मंदिर की पवित्रता और मयार्दा को समझना भी जरूरी है।

उन्होंने श्रद्धालुओं से आत्मचिंतन करने का आह्वान करते हुए कहा कि व्यक्ति को यह जानना चाहिए कि पवित्र जिनालय में कौन-सा आचरण उचित है और कौन-सा व्यवहार धार्मिक साधना के अनुकूल नहीं है। उन्होंने कहा कि ह्लक्या करना हैह्व यह जानना जितना जरूरी है, उतना ही ह्लक्या नहीं करना हैह्व यह समझना भी आवश्यक है।

मुनि श्री ने मंदिर को केवल पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठानों का स्थान न मानकर आत्मचिंतन, तत्वचर्चा और आध्यात्मिक साधना का केंद्र बताया। उनके अनुसार

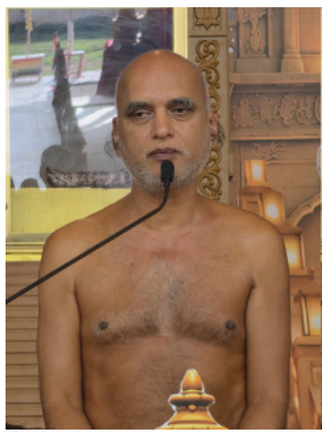

मंदिर में प्रवेश करते समय व्यक्ति की मानसिकता भी सांसारिक विषयों से हटकर धर्म और आत्मा की ओर होनी चाहिए।

मंदिर में अनावश्यक बातचीत से बचने की प्रेरणा

उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति मंदिर में पहुंचकर भी घर-परिवार की समस्याओं, व्यापार, नौकरी, परियोजनाओं या अन्य सांसारिक विषयों पर चर्चा करता रहता है, तो वह मंदिर आने के वास्तविक उद्देश्य से दूर हो जाता है।

निर्यापक मुनि श्री ने श्रद्धालुओं को जिनालय में अनावश्यक बातचीत से बचने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि मंदिर का वातावरण जितना शांत और आध्यात्मिक रहेगा, साधक की एकाग्रता उतनी ही बढ़ेगी। प्रत्येक श्रद्धालु की जिम्मेदारी है कि वह स्वयं मंदिर की मयार्दा का पालन करे और अपने व्यवहार से दूसरे श्रद्धालुओं की पूजा, ध्यान और साधना में बाधा न डाले।

उन्होंने ऊंची आवाज में बातचीत, सांसारिक विषयों की चर्चा और असावधान व्यवहार से बचने की आवश्यकता बताई। उनका कहना था कि धार्मिक स्थल पर व्यक्ति का आचरण उसके धार्मिक संस्कारों का परिचायक होना चाहिए। बाहरी पूजा के साथ भीतर का परिवर्तन जरूरी

मुनि श्री वीरसागर जी महाराज ने कहा कि धार्मिक क्रियाओं का उद्देश्य बाहरी प्रदर्शन नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर परिवर्तन लाना है। यदि कोई व्यक्ति नियमित रूप से मंदिर जाता है, लेकिन उसके विचार, वाणी और व्यवहार में संयम नहीं आता, तो उसे अपने धार्मिक जीवन का आत्मावलोकन करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि मंदिर में किया गया प्रत्येक दर्शन और पूजन व्यक्ति को अपने भीतर झांकने, आत्मा के स्वरूप को समझने तथा अपने दोषों को कम करने की प्रेरणा देने वाला होना चाहिए। धर्म का प्रभाव व्यक्ति की दिनचर्या और व्यवहार में दिखाई देना ही उसकी सार्थकता का महत्वपूर्ण संकेत है।

कलावे को लेकर भी दिया मार्गदर्शन

प्रवचन के दौरान अभिषेक के समय हाथ में बांधे जाने वाले कलावे से संबंधित एक प्रश्न पर भी निर्यापक मुनि श्री ने मार्गदर्शन दिया। उन्होंने बताया कि कलावा विशेष धार्मिक अनुष्ठान, विधान, रक्षाबंधन अथवा भाई दूज जैसे अवसरों पर धार्मिक भावना के साथ बांधा जाता है। उन्होंने कहा कि इसका अर्थ यह नहीं है कि उसे हमेशा हाथ में बांधे रखा जाए। धार्मिक अवसर या अनुष्ठान पूरा होने के बाद उसे हटा देना उचित है।

उन्होंने स्वच्छता और धार्मिक शुचिता के दृष्टिकोण से भी इस विषय को समझाया। लंबे समय तक हाथ में बंधा धागा पसीने और नमी के संपर्क में रहने से गंदा हो सकता है। ऐसे में अभिषेक जैसी धार्मिक क्रियाओं के दौरान शारीरिक स्वच्छता के साथ धार्मिक शुचिता का ध्यान रखना भी आवश्यक है। मुनि श्री ने कहा कि धार्मिक परंपराओं का पालन केवल बाहरी रूप से करने के बजाय उनके पीछे निहित शुचिता, संयम और आत्मकल्याण की भावना को समझना चाहिए। विवेक और जागरूकता के साथ किया गया धार्मिक आचरण ही व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है।

मंदिर की यात्रा बाहर से भीतर की ओर

निर्यापक मुनि श्री ने श्रद्धालुओं को प्रेरित करते हुए कहा कि मंदिर में प्रवेश करते समय संसार की भागदौड़ और चिंताओं को कुछ समय के लिए अलग रखने का प्रयास करना चाहिए। जिनेंद्र भगवान के स्वरूप, आत्मस्वरूप और धर्म के सिद्धांतों पर चिंतन करना मंदिर आगमन को सार्थक बनाता है। उन्होंने कहा कि धर्म के मार्ग पर छोटी-छोटी असावधानियां भी साधना की दिशा को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए व्यक्ति को अपने प्रत्येक व्यवहार का आत्मावलोकन करना चाहिए और यह विचार करना चाहिए कि उसके कर्म संवर की दिशा में जा रहे हैं या आस्रव और बंध को बढ़ा रहे हैं। प्रवचन का केंद्रीय संदेश यही रहा कि मंदिर जाना केवल एक धार्मिक दिनचर्या न बने, बल्कि आत्मशुद्धि और आत्मजागरण का अवसर बने। यदि जिनालय में जाने के बाद मन शांत होता है, विचार निर्मल होते हैं, वाणी संयमित होती है और व्यवहार में धर्म का प्रवचन के अंत में श्रद्धालुओं से मंदिर की पवित्रता और मयार्दा बनाए रखने, अनावश्यक बातचीत से बचने तथा पूजा-अभिषेक के दौरान शारीरिक और मानसिक शुचिता का ध्यान रखने का आह्वान किया गया। मुनि श्री ने प्रेरणा दी कि श्रद्धालु मंदिर में केवल भगवान के दर्शन करने के लिए नहीं, बल्कि अपने भीतर के दोषों को पहचानने और उन्हें दूर करने का संकल्प लेकर आएं। यही सजगता धार्मिक जीवन को वास्तविक आध्यात्मिक साधना में बदल सकती है और व्यक्ति को आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ा सकती है। समाचार प्रेषकः विपिन कुमार जैन।

विधान सौधा में सलीम अहमद की प्रेस कॉन्फ्रेंस

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 25 अगस्त 2026। कर्नाटक विधान परिषद के सभापति सलीम अहमद ने मंगलवार को बेंगलुरु स्थित विधान सौधा में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने मीडिया प्रतिनिधियों से विभिन्न विषयों पर संवाद किया।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के आयोजन का उद्देश्य संबंधित विषयों के बारे में मीडिया को जानकारी उपलब्ध कराना और पत्रकारों के साथ संवाद स्थापित करना रहा। कार्यक्रम में मौजूद मीडिया प्रतिनिधियों ने सलीम अहमद से संबंधित विषयों पर जानकारी प्राप्त की।

विधान सौधा में आयोजित इस प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से कर्नाटक विधान परिषद से जुड़े विषयों को लेकर मीडिया के समक्ष जानकारी साझा की गई।

अरसिकेरे में 30 अगस्त को गौ माता जागरण महोत्सव

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलूरु/अरसिकेरे, 25 अगस्त 2026। कस्तूरबा गांधी नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट एवं भारतीय गौ परिवार चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में रविवार, 30 अगस्त को अरसिकेरे स्थित कस्तूरबा गौशाला में श्री गौ माता जागरण महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम को लेकर गौभक्तों में उत्साह है और विभिन्न शहरों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है।

आयोजकों के अनुसार जागरण महोत्सव में राजस्थान के प्रसिद्ध भजन कलाकार

महावीर सांखला अपनी भजन प्रस्तुतियों के माध्यम से गौभक्ति और धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। आयोजन का उद्देश्य गौसेवा और गौ संरक्षण के प्रति समाज में जागरूकता एवं श्रद्धा की भावना को मजबूत करना बताया गया है। कार्यक्रम के लिए कस्तूरबा गौशाला के प्रतिनिधियों ने गौप्रेमी महेंद्र मुणोत से उनके प्रतिष्ठान पर जाकर मुलाकात की और उन्हें कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने का निमंत्रण दिया।

आयोजकों ने बताया कि गौ माता जागरण महोत्सव में तुमकुर, चिकमगलूर, चित्रदुर्गा, हासन सहित आसपास के विभिन्न शहरों से बड़ी संख्या में गौभक्तों के पहुंचने की उम्मीद है। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आयोजकों एवं गौशाला से जुड़े कार्यकताओं द्वारा तैयारियां की जा रही हैं। आयोजकों ने गौप्रेमियों एवं श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर गौ माता जागरण महोत्सव में सहभागी बनने का आह्वान किया है। समाचार प्रेषकः उपेन्द्र कुमार।

बेंगलुरु में कराटे का राष्ट्रीय संगम, 160 खिलाड़ियों ने दिखाया दम

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 25 अगस्त 2026। अनुशासन, आत्मसंयम और खेल भावना के संदेश के साथ बेंगलुरु में 9वें ऑल इंडिया क्योकुशिन कराटे ओपन टूर्नामेंट का सफल आयोजन किया गया। क्योकुशिन कराटे बेंगलुरु के तत्वावधान में 22 और 23 अगस्त को एजिपुरा स्थित मॉडर्न इंग्लिश नर्सरी, प्राइमरी एवं हाई स्कूल में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देश के विभिन्न राज्यों से 160 से अधिक मार्शल आर्ट खिलाड़ियों ने भाग लिया।

टूर्नामेंट का आयोजन चीफ ऑर्गनाइजर शिहान रवि कार्वाल्हो के नेतृत्व में किया गया। प्रतियोगिता का उद्घाटन कोरमंगला ब्लॉक के अध्यक्ष गोवर्धन रेड्डी ने पारंपरिक दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए खेल के दौरान साहस के साथ विनम्रता, अनुशासन और भाईचारे की भावना बनाए रखने का संदेश दिया। प्रतियोगिता में 9 से 52 वर्ष तक की आयु के महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों ने विभिन्न आयु, लिंग और वजन वर्गों के आधार पर निर्धारित 15 श्रेणियों में हिस्सा लिया। खिलाड़ियों ने मैट पर तकनीकी दक्षता, शारीरिक क्षमता और आत्मविश्वास का प्रदर्शन किया।

राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में कर्नाटक के साथ महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, उत्तराखंड और नई दिल्ली से आए खिलाड़ियों एवं टीमों ने भाग लिया। विभिन्न राज्यों से आए अनुभवी सेंसेई एवं निर्णायकों ने मुकाबलों का संचालन किया और तकनीकी नियमों तथा निष्पक्ष खेल के मानकों का पालन सुनिश्चित किया। प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों के बीच कड़े मुकाबले देखने को मिले। वहीं, अलग-अलग राज्यों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आए खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और उनके परिवारों की सहभागिता ने आयोजन को खेल प्रतियोगिता से आगे बढ़ाकर राष्ट्रीय एकता के मंच का रूप दिया। प्रतिभागियों ने मार्शल आर्ट के प्रति साझा सम्मान के माध्यम से आपसी सौहार्द और भाईचारे का परिचय दिया। आयोजकों के अनुसार क्योकुशिन कराटे केवल शारीरिक मुकाबले की कला नहीं है, बल्कि यह आत्मसंयम, अनुशासन, ईमानदारी, साहस और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने का माध्यम भी है। प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने जीत और हार दोनों को खेल भावना के साथ स्वीकार किया। शिहान रवि कार्वाल्हो और आयोजन टीम के मार्गदर्शन में संपन्न प्रतियोगिता ने खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर देने के साथ विभिन्न राज्यों के मार्शल आर्ट प्रतिभागियों को एक मंच पर लाने का कार्य किया। आयोजकों ने प्रतियोगिता को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों, निर्णायकों, अभिभावकों और सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। दो दिवसीय टूर्नामेंट का समापन इस संदेश के साथ हुआ कि खेल की वास्तविक जीत केवल पदक हासिल करने में नहीं, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास, सम्मान और एकता की भावना को मजबूत करने में है।

समाचार प्रेषकः चंद्रकांत

भागवत कथा में भक्ति और सत्संग का संदेश

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलूरु, 25 अगस्त 2026। श्री गुरु कृपा सेवा समिति के तत्वावधान में माहेश्वरी भवन में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर कथा का श्रवण किया। कथा पूज्य गुरुवर श्री राजारामजी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित की जा रही है।

कथा वाचक संत श्री कृपारामजी महाराज ने भागवत कथा के विभिन्न प्रसंगों का वर्णन करते हुए भगवान की भक्ति, सत्संग और सदाचार के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण मनुष्य के भीतर आध्यात्मिक चेतना जागृत करता है और जीवन को सकारात्मक दिशा प्रदान करता है।

संत श्री कृपारामजी महाराज ने कहा कि भागवत में भगवान के प्रति प्रेम, समर्पण और भक्ति का संदेश दिया गया है। मनुष्य को अपने दैनिक जीवन में अच्छे कर्म करते हुए प्रभु का स्मरण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि संसार की व्यस्तता के बीच भगवान की भक्ति और सत्संग के लिए समय निकालना आवश्यक है। सत्संग से मन के विकार दूर होते हैं तथा सकारात्मक विचारों का विकास होता है।

कथा के दौरान संत ने विभिन्न धार्मिक प्रसंगों को सरल और भावपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया। प्रवचन के दौरान श्रद्धालुओं ने जयकारे लगाए और भजनों पर भक्तिभाव से झूमते नजर आए। इससे माहेश्वरी भवन का वातावरण पूरे समय भक्तिमय बना रहा।

पूज्य गुरुवर श्री राजारामजी महाराज के सानिध्य में चल रहे इस आयोजन में प्रतिदिन श्रद्धालुओं की सहभागिता बनी हुई है। समिति की ओर से कथा स्थल पर श्रद्धालुओं के बैठने सहित आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। आयोजन को लेकर श्रद्धालुओं में उत्साह देखा जा रहा है। समिति पदाधिकारियों ने श्रद्धालुओं से अधिक संख्या में कथा में शामिल होकर धर्मलाभ लेने का आग्रह किया। समाचार प्रेषकः नारायणलाल सीरवी।

कबीर की भक्ति ने दिया मानवता का संदेश

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलूरु, 25 अगस्त 2026। सीरवी समाज ट्रस्ट, एच.एस.आर. लेआउट स्थित वडेर भवन में चातुर्मास के अवसर पर आयोजित भक्तमाल कथा के चौथे दिन सोमवार को संत साध्वी हर्षिता ने संत कबीरदास के जीवन, आध्यात्मिक चिंतन और भक्ति संदेश पर प्रकाश डाला। कथा में श्रद्धालुओं ने संत कबीर के जीवन प्रसंगों और उनके सामाजिक एवं आध्यात्मिक विचारों को श्रद्धापूर्वक सुना।

साध्वी हर्षिता ने कहा कि संत कबीरदास ने अपने जीवन में आडंबर, दिखावे और सामाजिक भेदभाव का विरोध करते हुए सच्ची भक्ति, सदाचार और मानवता को सर्वोच्च महत्व दिया। उनके अनुसार ईश्वर की प्राप्ति बाहरी आडंबरों से नहीं, बल्कि निर्मल मन, आत्मचिंतन और सच्ची भक्ति से होती है। उन्होंने कहा कि कबीरदास ने जात-पात, ऊंच-नीच और भेदभाव की संकीर्ण सोच के विरुद्ध समाज को समानता और मानवता का संदेश दिया। उनके दोहे आज भी मनुष्य को जीवन की वास्तविकता समझने, आत्ममंथन करने और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

कथा के दौरान साध्वी हर्षिता ने संत कबीरदास के जीवन से जुड़े विभिन्न प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि संतों की वाणी केवल सुनने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उसे व्यवहार और जीवनचर्या में उतारना ही उनकी शिक्षाओं का वास्तविक सम्मान है। उन्होंने कहा कि मनुष्य यदि अहंकार, लोभ और मोह का त्याग कर प्रेम, सेवा, सत्य तथा सद्भावना के साथ जीवन जीए, तो यही सच्ची भक्ति का मार्ग है। कथा के दौरान श्रद्धालुओं ने संत कबीर के विचारों को आत्मसात करने का संकल्प लिया। समाचार प्रेषकः नारायणलाल सीरवी।

कृत्रिम पैरों से 20 से अधिक लोगों को मिली नई उम्मीद

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

हुब्बल्ली, 25 अगस्त 2026। हुब्बल्ली के किम्स अस्पताल परिसर स्थित महावीर लिम्ब सेंटर में ऑल इंडिया जैन यूथ फेडरेशन, महावीर लिम्ब सेंटर, राजकुमार आर्य फाउंडेशन एवं पतंजलि योग समिति के संयुक्त सहयोग से कृत्रिम पैर प्रत्यारोपण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 20 से अधिक जरूरतमंद लाभार्थियों को कृत्रिम पैर उपलब्ध कराए गए। इस अवसर पर लाभार्थियों को कृत्रिम पैर प्रदान करते हुए पतंजलि योग समिति, कर्नाटक के वरिष्ठ राज्य प्रभारी, अंतरराष्ट्रीय योग गुरु एवं राजकुमार आर्य फाउंडेशन के संस्थापक भंवरलाल आर्य ने कहा कि ऑल इंडिया जैन यूथ फेडरेशन और महावीर लिम्ब सेंटर पिछले 25 वर्षों से जरूरतमंद लोगों की सेवा में जुटे हैं। उनके अनुसार कर्नाटक, गोवा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और केरल में 300 से अधिक शिविरों के माध्यम से 58 हजार से अधिक लोगों को कृत्रिम हाथ-पैर उपलब्ध कराए जा चुके हैं। भंवरलाल आर्य ने कहा कि समाज सेवा का प्रत्येक कार्य महत्वपूर्ण होता है, लेकिन किसी दुर्घटना या अन्य कारण से हाथ-पैर खो चुके लोगों को निःशुल्क कृत्रिम अंग उपलब्ध कराकर उन्हें दोबारा आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास विशेष रूप से सराहनीय है। उन्होंने महावीर लिम्ब सेंटर के अध्यक्ष महेंद्र सिंघवी के नेतृत्व में चलाए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना करते हुए भविष्य में भी तन, मन और धन से सहयोग जारी रखने की बात कही।

महावीर लिम्ब सेंटर के अध्यक्ष महेंद्र सिंघवी ने शिविर के लिए योग गुरु भंवरलाल आर्य एवं उनकी टीम का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि ह्यमानव सेवा ही ईश्वर सेवा हैह्ब की भावना से जरूरतमंदों की सहायता करना संस्था का प्रमुख उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक को योगमय एवं स्वास्थ्यपूर्ण बनाने के अभियान में महावीर लिम्ब सेंटर की टीम पूरा सहयोग करेगी।

महेंद्र सिंघवी ने बताया कि जिन जरूरतमंद लोगों को कृत्रिम हाथ या पैर की आवश्यकता है, वे हुब्बल्ली के किम्स अस्पताल परिसर स्थित महावीर लिम्ब सेंटर से संपर्क कर सकते हैं। संस्था की ओर से पात्र जरूरतमंदों को निःशुल्क कृत्रिम हाथ-पैर उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा, ताकि वे अधिक आत्मविश्वास के साथ आत्मनिर्भर जीवन जी सकें।

शिविर में महावीर लिम्ब सेंटर प्रबंधन मंडल के गौतम गोलेचा, मानव सिंघवी, महावीर कुंदूर, बीरबल बिश्नोई, सुनील भूरट, सुभाष डंक, उदाराम प्रजापत, वेलाराम गाची, मुख्य तकनीशियन एम.एच. नायक, के. सुदर्शन, अक्षय, बसवराज, विजय और विनायक सहित अन्य सेवा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। शिविर में लाभार्थियों के परिवारजन भी मौजूद रहे। शिविर के माध्यम से जरूरतमंदों को कृत्रिम अंग उपलब्ध कराने के साथ उन्हें आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर मिला। आयोजकों ने भविष्य में भी ऐसे सेवा शिविरों को निरंतर जारी रखने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

समाचार प्रेषकः भंवरलाल आर्य, हुब्बल्ली।

श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया खरतरगच्छ दिवस

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलूरु, 25 अगस्त 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद की ओर से श्री जिनकुशलसूरि जैन आराधना भवन में खरतरगच्छ दिवस श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में समाज के पदाधिकारियों, महिला परिषद की सदस्यों एवं श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी के अध्यक्ष तेजराज मालानी, संघ अध्यक्ष प्रकाश भंसाली, मंत्री राजेंद्र गुलेच्छा, जिनदत्त कुशल मंडल अध्यक्ष ललित डाकलिया, केयुप अध्यक्ष नीलेश मेहता, महिला परिषद अध्यक्ष पवनी बाफना, उपाध्यक्ष ललिता गुलेच्छा, सुशीला भंसाली, मंत्री नंदा बाफना, कोषाध्यक्ष संगीता पारख, राजुल गुलेच्छा, सहमंत्री नंदा मेहता, नीतू गुलेच्छा, प्रचार-प्रसार संयोजक ललिता बाफना एवं चंदू डाकलिया सहित अन्य पदाधिकारियों द्वारा गच्छ स्थापक युगप्रधान श्री जिनेश्वरसूरि के चित्र के समक्ष

दीप प्रज्वलन, माल्यार्पण एवं शासन ध्वज आरोहण के साथ हुआ। गच्छ वंदना गीत के दौरान उपस्थित श्रद्धालु करबद्ध होकर खड़े रहे और श्रद्धा व्यक्त की। महिला परिषद अध्यक्ष पवनी बाफना ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए खरतरगच्छ की परंपरा एवं धार्मिक विरासत के महत्व पर प्रकाश डाला। साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी ने खरतरगच्छ दिवस की विशेषताओं की जानकारी देते हुए बताया कि इसी दिन तपोमूर्ति गणाधीश श्री छगनसागरजी म.सा. की पुण्यतिथि भी है। उन्होंने कहा कि परंपरा के अनुसार स्वयं अंबिकादेवी द्वारा खरतरगच्छ के संस्थापक जिनेश्वरसूरि एवं प्रथम दादागुरु जिनदत्तसूरि को युगप्रधान की पदवी प्रदान की गई थी।

मुनि श्री मलयप्रभसागरजी ने अपने प्रवचन में खरतरगच्छ दिवस घोषित किए जाने की पृष्ठभूमि और इसके धार्मिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने श्रद्धालुओं को खरतरगच्छ की आध्यात्मिक परंपरा एवं आचार्यों के योगदान से अवगत कराया। मुख्य कार्यक्रम में खरतरगच्छ के अनेक पूवाचार्यों एवं दादागुरुओं द्वारा विभिन्न गोत्रों की स्थापना से जुड़े कारणों और प्रसंगों को पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुति के दौरान श्रद्धालुओं ने धार्मिक एवं ऐतिहासिक प्रसंगों को रुचिपूर्वक देखा और सुना।

कार्यक्रम में अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद की अनेक गणमान्य सदस्य एवं समाज के श्रद्धालु उपस्थित रहे। आयोजन का समापन श्रद्धा, भक्ति और धार्मिक चेतना के वातावरण में हुआ। समाचार प्रेषकः ललित डाकलिया।

मासक्षमण तपस्वी अक्षय श्रीश्रीमाल का अभिनंदन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 25 अगस्त 2026। स्थानीय श्री ब्यावर संघ की ओर से मासक्षमण की

तपस्या करने वाले तपस्वी श्री अक्षय श्रीश्रीमाल का सम्मान एवं अभिनंदन किया गया। श्रीश्रीमाल परिवार द्वारा तपस्या के उपलक्ष्य में आयोजित भक्ति संध्या में संघ के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने तपस्वी का सम्मान कर उनके प्रति शुभकामनाएं व्यक्त कीं। इस अवसर पर संघ अध्यक्ष ललित डाकलिया, महामंत्री रुपचंद कुमट, युवा अध्यक्ष कुलदीप छाजेड़, अरविन्द खिंवसरा, पदमचंद बोहरा, राजेन्द्र संचेती, विवेक खटोड़, भरत कोठारी, हेमन्त गुलेच्छा तथा लेडीज विंग से चन्द्रकला डाकलिया और मोनिका कुमट सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

संघ के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने तपस्वी श्री अक्षय श्रीश्रीमाल का माला, शाल और स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनंदन किया। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि आत्मसाधना के उद्देश्य से की गई दीर्घ एवं उग्र तपस्या प्रेरणादायी है। उन्होंने कहा कि तपस्वी ने अपनी साधना के माध्यम से परिवार और संघ का गौरव बढ़ाया है। कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों ने श्री अक्षय श्रीश्रीमाल के उत्तम स्वास्थ्य एवं सुखमय जीवन की कामना करते हुए उनकी तपस्या के लिए साधुवाद एवं शुभकामनाएं दीं। समाचार प्रेषकः ललित डाकलिया।

विजयेंद्र का सरकार पर वार, 1 से 10 सितंबर तक 200 किमी पदयात्रा

भारतार्थ खबर, बेंगलुरु संवाददाता
धन्नाराम चौधरी
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 25 अगस्त 2026। कर्नाटक की राजनीति में एक बार फिर सड़क पर संघर्ष का माहौल बनता दिखाई दे रहा है। भारतीय जनता पार्टी ने राज्य की कांग्रेस सरकार के खिलाफ व्यापक जनसंपर्क अभियान के तहत 1 से 10 सितंबर 2026 तक करीब 200 किलोमीटर लंबी पदयात्रा निकालने का ऐलान किया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र के अनुसार यह पदयात्रा रायचूर से शुरू होकर बेल्लारी में समाप्त होगी। पार्टी का दावा है कि इस अभियान के माध्यम से राज्य सरकार की कथित नाकामियों, किसानों और युवाओं से जुड़े मुद्दों तथा उत्तरी कर्नाटक की समस्याओं को जनता के बीच प्रमुखता से उठाया जाएगा। विजयेंद्र ने मंगलवार को मल्लेश्वरम स्थित प्रदेश भाजपा कार्यालय ह्यजगन्नाथ भवनह्न में पत्रकारों से बातचीत में कहा कि भाजपा सड़क पर उतरकर लोगों के बीच सरकार के कामकाज का हिसाब रखेगी। उनके अनुसार पदयात्रा का उद्देश्य केवल राजनीतिक विरोध दर्ज कराना नहीं, बल्कि किसानों, गरीबों, युवाओं और उत्तरी कर्नाटक के लोगों से जुड़े मुद्दों को जनता के सामने लाना भी है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकार राज्य के विकास, किसानों की समस्याओं, गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाओं, रोजगार के अवसरों और आरक्षण से जुड़े विषयों पर अपेक्षित गंभीरता नहीं दिखा रही है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि सरकार की कथित विफलताओं को जनता तक पहुंचाने के लिए पार्टी ने बड़े स्तर पर पदयात्रा का निर्णय लिया है। रायचूर से शुरूआत, बेल्लारी में समापन भाजपा के घोषित कार्यक्रम के अनुसार पदयात्रा 1 सितंबर 2026 को रायचूर से शुरू होगी और 10 सितंबर 2026 को बेल्लारी में इसका समापन किया जाएगा। लगभग 200 किलोमीटर की इस यात्रा के दौरान भाजपा कार्यकर्ता और नेता विभिन्न क्षेत्रों से गुजरते हुए लोगों से संवाद करेंगे। विजयेंद्र ने बताया कि पदयात्रा के उद्घाटन और समापन कार्यक्रमों में केंद्रीय स्तर के नेता भी शामिल होंगे। पार्टी की योजना इन दस दिनों के दौरान किसानों, गरीबों, युवाओं और आम जनता से जुड़े मुद्दों को व्यापक स्तर पर उठाने की है। यह अभियान कर्नाटक भाजपा के लिए राजनीतिक रूप से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि पार्टी विधानसभा में विपक्ष की भूमिका निभाने के साथ-साथ राज्य सरकार के खिलाफ जनमत तैयार करने की कोशिश कर रही है। जेडीएस भी करेगा समर्थन विजयेंद्र ने कहा कि यह भाजपा का राजनीतिक मार्च है, लेकिन जनता से जुड़े मुद्दों को लेकर जनता दल (सेक्युलर) की ओर से भी समर्थन मिलने की उम्मीद है। उन्होंने बताया कि जेडीएस नेता एच.डी. कुमारस्वामी पदयात्रा को समर्थन देंगे। भाजपा के इस कदम से विपक्षी दलों के बीच सरकार के खिलाफ मुद्दों को लेकर समन्वय की संभावना भी दिखाई दे रही है। हालांकि पदयात्रा का नेतृत्व भाजपा ही करेगी और पार्टी इसे अपने राजनीतिक अभियान के रूप में आगे बढ़ाएगी। विधानसभा सत्र को लेकर सरकार पर निशाना विजयेंद्र ने विधानसभा सत्र के संचालन को लेकर भी कांग्रेस सरकार पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि विपक्ष चाहता था कि किसानों की समस्याओं, सूखे, सरकारी भर्तियों, कथित केपीएससी अनियमितताओं, उत्तरी कर्नाटक के विकास, बिदादी टाउनशिप और नाइस परियोजना सहित कई महत्वपूर्ण विषयों पर सदन में विस्तृत चर्चा हो। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का आरोप है कि सरकार ने इन मुद्दों पर पर्याप्त चर्चा का अवसर नहीं दिया और विधानसभा सत्र को अपेक्षाकृत कम अवधि में समाप्त कर दिया। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता से जुड़े ज्वलंत मुद्दों पर सदन में चर्चा होना आवश्यक है। उन्होंने वाल्मीकि निगम से जुड़े कथित घोटाले का भी उल्लेख किया और आरोप लगाया कि इस मामले में विपक्ष द्वारा उठाए गए सवालों का सरकार ने संतोषजनक जवाब नहीं दिया। विजयेंद्र ने दावा किया कि इस मामले से जुड़े आरोपों और पूर्व में सामने आए घटनाक्रम को लेकर विपक्ष लगातार सरकार से जवाब मांगता रहा है। हालांकि, इन आरोपों पर सरकार या संबंधित कांग्रेस नेताओं का पक्ष इस वक्त उपलब्ध बयान में शामिल नहीं है। इसलिए विजयेंद्र द्वारा लगाए गए आरोपों को भाजपा के राजनीतिक पक्ष के रूप में ही देखा जाना चाहिए। बीपीएल कार्ड और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का मुद्दा विजयेंद्र ने दावा किया कि राज्य में बड़ी संख्या में गरीब परिवारों से जुड़े बीपीएल कार्ड रद्द किए जा रहे हैं। उन्होंने वृद्धावस्था पेंशन और सामाजिक सुरक्षा से संबंधित सहायता में कथित देरी का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पात्र लोगों तक समय पर नहीं पहुंच रहा है। भाजपा का कहना है कि ऐसे विषयों पर सदन में व्यापक चर्चा होनी चाहिए थी, लेकिन सरकार ने विपक्ष को पर्याप्त अवसर नहीं दिया। इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि इस बयान से नहीं होती है। लिहाजा भाजपा द्वारा उठाए गए इन मुद्दों पर सरकारी आंकड़ों और संबंधित विभागों के आधिकारिक स्पष्टीकरण को भी महत्वपूर्ण माना जाएगा। डी.के. शिवकुमार पर रियल एस्टेट को लेकर आरोप मुख्यमंत्री पद से जुड़े राजनीतिक समीकरणों के संदर्भ में विजयेंद्र ने मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार पर भी तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री की रुचि राज्य के व्यापक विकास की तुलना में बिदादी टाउनशिप, कनकपुरा क्षेत्र, एयरपोर्ट और नाइस परियोजना जैसे रियल एस्टेट से जुड़े विषयों में अधिक है। विजयेंद्र ने पार्क की जमीन से जुड़े मुद्दे का भी उल्लेख करते हुए सरकार की नीतियों पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि एक ओर सरकार पर्यावरण और पौधारोपण को बढ़ावा देने की बात करती है, जबकि दूसरी ओर रियल एस्टेट परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के आरोप लग रहे हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने इसे सरकार की ह्यदोहरी नीतिह्न बताया। इन आरोपों को भी विपक्षी नेता के राजनीतिक आरोप के रूप में ही रिपोर्ट किया जाना उचित है। संबंधित सरकारी विभाग या मुख्यमंत्री कार्यालय की प्रतिक्रिया मिलने पर इस पक्ष को भी खबर में शामिल किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री के नेतृत्व पर भी सवाल विजयेंद्र ने मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार के नेतृत्व को लेकर भी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री बनने के शुरूआती दौर में शिवकुमार काफी सक्रिय और उत्साहपूर्ण नजर आ रहे थे, लेकिन अब सरकार की कार्यशैली में कथित तौर पर कमजोरी दिखाई दे रही है। उन्होंने मंत्रिमंडल विस्तार, विभागों के बंटवारे और सरकार के भीतर सामने आने वाली नाराजगी का उल्लेख करते हुए कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने दावा किया कि सरकार के भीतर कई मुद्दों को लेकर असंतोष है।

भाजपा का कहना है कि आगामी पदयात्रा के जरिए इन सभी मुद्दों को जनता के बीच ले जाया जाएगा और सरकार से जवाब मांगा जाएगा। भाजपा के वरिष्ठ नेता रहेंगे मौजूद

पदयात्रा की घोषणा के दौरान विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक, विधान परिषद में विपक्ष के नेता चलवाड़ी नारायणस्वामी, पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ. सी.एन. अश्वत्थनारायण, पूर्व मंत्री बी. श्रीरामुलु, पूर्व मंत्री गली जनार्दन रेड्डी, राज्य उपाध्यक्ष राजुगौड़ा नायक, राज्य महासचिव पी. राजीव, विधानसभा में विपक्ष के मुख्य सचेतक डोड्डनगौड़ा जी. पाटिल, विधान परिषद सदस्य सी.टी. रवि, विधायक प्रभु चौहान, डॉ. शैलेंद्र बेलडाले, मनप्पा डी. वज्जल, डॉ. एस. शिवराज पाटिल, युवा मोर्चा के राज्य महासचिव एवं विधायक हरीश पूंजा, एसटी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बंगारू हनुमंथु, पूर्व विधायक एम.डी. लक्ष्मीनारायण, प्रदेश सचिव शरणु तारिकेरी, एच.सी. तमेश गौड़ा और नेता के. करियप्पा सहित अन्य नेता मौजूद रहे। राजनीतिक संदेश साफ

रायचूर से बेल्लारी तक प्रस्तावित 200 किलोमीटर की पदयात्रा के जरिए भाजपा एक साथ कई राजनीतिक संदेश देने की तैयारी में है। पार्टी जहां सरकार की कथित नाकामियों को जनता के बीच ले जाने का दावा कर रही है, वहीं किसानों, युवाओं, गरीबों और उत्तरी कर्नाटक के मुद्दों को अभियान का प्रमुख आधार बनाया गया है। अब यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि 1 सितंबर 2026 से शुरू होने वाली पदयात्रा को जनता का कितना समर्थन मिलता है और कांग्रेस सरकार इन आरोपों का किस तरह जवाब देती है। दस दिनों तक चलने वाला यह अभियान कर्नाटक की राजनीति में विपक्ष की सक्रियता और आगामी राजनीतिक रणनीति के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

भरत मिलाप के प्रसंग से गूंजा त्याग और भाईचारे का संदेश

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलूरू, 25 अगस्त 2026। मातेश्वरी भक्त मंडल के तत्वावधान में होसूर बंडे स्थित श्रीकृष्णा गोसेवा आश्रम गोशाला में चल रही नौ दिवसीय श्रीराम कथा के सातवें दिन मंगलवार को श्रद्धा, भक्ति और भावनाओं का विशेष संगम देखने को मिला। कथा वाचक संत किशोरचन्द रामायणी ने भगवान श्रीराम और उनके अनुज भरत के अटूट प्रेम, त्याग, समर्पण और भाईचारे से जुड़े भरत मिलाप के पावन प्रसंग का भावपूर्ण वर्णन किया। प्रसंग के दौरान कथा पंडाल जय श्रीराम के जयघोष से गूंज उठा और अनेक श्रद्धालु भावुक हो गए। संत किशोरचन्द रामायणी ने कहा कि भरत का चरित्र त्याग, तपस्या और समर्पण की अनुपम मिसाल है। उन्हें राजपाट प्राप्त होने के बावजूद उन्होंने उसे अपना अधिकार नहीं माना और भगवान श्रीराम को ही अयोध्या का वास्तविक राजा स्वीकार किया। भरत के मन में श्रीराम के प्रति प्रेम और सम्मान इतना गहरा था कि वे उन्हें वन से वापस अयोध्या लाने के लिए स्वयं उनके पास पहुंचे।

उन्होंने कहा कि भरत मिलाप केवल दो भाइयों के मिलन का प्रसंग नहीं है, बल्कि यह प्रेम, त्याग, मर्यादा, विश्वास और पारिवारिक संस्कारों का जीवंत संदेश है। वर्तमान समय में जब परिवारों के भीतर आपसी मतभेद और दूरी बढ़ती दिखाई देती है, तब श्रीराम और भरत का आदर्श समाज को रिश्तों की वास्तविक गरिमा समझाने का मार्ग दिखाता है। झांकी ने किया श्रद्धालुओं को भावुक

कथा के दौरान भगवान श्रीराम और भरत के मिलाप की जीवंत झांकी प्रस्तुत की गई। जैसे ही दोनों भाइयों के गले मिलने का भावपूर्ण दृश्य सामने आया, श्रद्धालुओं ने जय श्रीराम के जयघोष से पूरे परिसर को गुंजायमान कर दिया। भावनात्मक वातावरण के बीच कई श्रद्धालुओं की आंखें नम हो गईं। संत किशोरचन्द ने कहा कि सच्चे रिश्ते अधिकार जताने से नहीं, बल्कि त्याग, विश्वास और समर्पण से मजबूत होते हैं। परिवार के सदस्य यदि एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ खड़े रहें और परस्पर सम्मान बनाए रखें तो परिवार में सौहार्द कायम रहता है। यही पारिवारिक एकता आगे चलकर समाज की मजबूती का आधार बनती है। उन्होंने कहा कि श्रीराम और भरत का संबंध भारतीय संस्कृति में भाईचारे और त्याग का आदर्श प्रस्तुत करता है। भरत ने सत्ता और वैभव से ऊपर भाई के प्रति अपने प्रेम और धर्म को स्थान दिया। उनका जीवन बताता है कि व्यक्ति का वास्तविक गौरव उसके अधिकारों में नहीं, बल्कि दूसरों के लिए किए गए त्याग और समर्पण में निहित है। भजनों से भक्तिमय हुआ कथा परिसर

संत पुष्करदास ने कहा कि श्रीराम कथा के दौरान प्रस्तुत भजनों और लगातार गूंजते श्रीराम के जयघोष से पूरा वातावरण भक्तिमय बना रहा। श्रद्धालुओं ने पूरे मनोयोग और श्रद्धाभाव के साथ कथा का श्रवण किया। कथा आयोजन के दौरान धार्मिक वातावरण के बीच श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीराम के आदर्शों को जीवन में उतारने का संकल्प भी लिया। आयोजकों के अनुसार कथा के आगामी प्रसंगों में भी श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या में सहभागिता की उम्मीद है।

आरती एवं महाप्रसादी के लाभार्थी गीतादेवी, जगदीश हाम्बड, रमेश कुमार, बाबूलाल तथा संगीता हाम्बड परिवार रहे। आयोजन में उपस्थित श्रद्धालुओं ने धार्मिक कार्यक्रम का लाभ लिया और महाप्रसादी ग्रहण की। समाचार प्रेषकः नारायणलाल सीरवी।

50वें जन्मदिन पर दोस्तों को कराई पांच धाम की यात्रा

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

शिवमोग्गा, 25 अगस्त 2026। जन्मदिन को केवल उत्सव तक सीमित रखने के बजाय उसे यादगार और प्रेरणादायक बनाने की पहल करते हुए विष्णु समाज के सक्रिय कार्यकर्ता एवं बीमा एजेंट नरपतलाल ने अपने 50वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में मित्रों के साथ धार्मिक एवं ऐतिहासिक यात्रा का आयोजन किया। उन्होंने शिवमोग्गा के 12 दोस्तों को मिनी बस के माध्यम से पांच धाम की यात्रा कराई। यात्रा में हलेबीडु, बेलूर, बेलगावी, श्रवणबेलगोला, हासन और चन्नरायपटना सहित ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों के दर्शन किए गए। यात्रियों ने इन प्राचीन तीर्थस्थलों की स्थापत्य कला, शिल्पकारी और नक्काशी को करीब से देखा। मंदिरों की कलात्मक बनावट, पत्थरों पर की गई बारीक कारीगरी तथा विशाल नंदी की प्रतिमा ने यात्रियों को विशेष रूप से आकर्षित किया।

यात्रा के दौरान विभिन्न मंदिरों और तीर्थस्थलों से जुड़े धार्मिक एवं ऐतिहासिक प्रसंगों की जानकारी भी यात्रियों को मिली। शांत एवं प्राकृतिक वातावरण के बीच धार्मिक स्थलों के दर्शन ने सभी को आध्यात्मिक शांति और मानसिक सुकून का अनुभव कराया। वापसी के दौरान चन्नरायपटना में प्रवासी भाइयों के घर पहुंचकर चाय-पानी के साथ हुई आत्मीय मुलाकात ने यात्रा की यादों में एक और अध्याय जोड़ दिया। मित्रों के साथ बिताया यह समय सभी के लिए आनंद, आपसी अपनत्व और पुरानी यादों को ताजा करने वाला अनुभव रहा। यात्रा में नरपतलाल, नेमाराम, राणाराम सेन, गोविंदराम, किशोर कुमार, मुलाराम, केवलाराम, जीवसिंह, सूरथाराम, मिठादास तथा पत्रकार शांतिलाल सहित अन्य सदस्यों ने भाग लेकर धार्मिक यात्रा का लाभ उठाया।

नरपतलाल की इस पहल ने जन्मदिन मनाने के पारंपरिक तरीके से अलग एक सकारात्मक संदेश दिया। मित्रों के साथ धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा कर जन्मदिन को यादगार बनाने की पहल सामाजिक मेलजोल, आध्यात्मिक शांति और मित्रता को मजबूत करने का प्रेरणादायक उदाहरण बनी। समाचार प्रेषकः शांतिलाल साकरीया, शिवमोग्गा।

श्रीयादे स्पोर्ट्स क्लब ने जीता वॉलीबॉल खिताब

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 25 अगस्त 2026। श्री प्रजापति समाज वॉलीबॉल फेडरेशन साउथ के तत्वावधान में केआर पुरम ब्लू टीम द्वारा रामपुरा-बिदरहली में आयोजित वॉलीबॉल टूर्नामेंट में बेंगलुरु, चेन्नई और हैदराबाद सहित कुल 13 टीमों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए खेल भावना, अनुशासन और टीमवर्क का परिचय दिया। टूर्नामेंट के दौरान प्रजापति समाज की विभिन्न संस्थाओं के गणमान्य पदाधिकारी एवं समाज के प्रमुख लोग मौजूद रहे। जीवाराम घोडेला, भूपेंद्र भेदरा, मुनालाल बेतेडिया, सुरेश कवाडिया, डायाराम बेरा, गोविंदलाल बाबरिया, केशाराम भाणा, सुरेश कुमार बेतेडिया, ढगलाराम हाटवा, कैलाश कुमार कपूरपुरा, महेंद्र कुमार ब्रांदणा, बाबूलाल साडीवाल, लक्ष्मीनारायण मुलेरा, जयराम भड़कोलिया, नवरत्न मल कालबाल, किशोर रेडवाल, नोरतमल धुमाणिया, मदनलाल कपूरपुरा, श्रवण कुमार सांचोरा, मदनलाल रांवरिया, जीवणराम ब्रांदणा, केवलराम लुणिया, पुनाराम कवाडिया और श्रवण कुमार ब्रांदणा सहित समाज के गणमान्य लोगों ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

प्रतियोगिता में श्रीयादे स्पोर्ट्स क्लब, विजय नगर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान हासिल कर खिताब अपने नाम किया। महालक्ष्मी स्टार्स क्लब ने दूसरा स्थान प्राप्त किया, जबकि श्री कृष्णा स्पोर्ट्स क्लब, जेपी नगर तीसरे स्थान पर रहा। व्यक्तिगत पुरस्कारों में मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार कुशल सांचोरा को और मैन ऑफ द सीरीज का सम्मान प्रवीण बाबरिया को दिया गया। बेस्ट अटैकर कालूराम बेतेडिया, बेस्ट सर्विस माणकलाल बेतेडिया, बेस्ट सेंटर कमलेश ब्रांदणा और बेस्ट नेकर तरुण कवाडिया चुने गए। बेस्ट डिफेंडर का पुरस्कार मंगलाराम बेतेडिया को तथा इमर्जिंग प्लेयर का पुरस्कार गोपाल कवाडिया को प्रदान किया गया।

समापन अवसर पर विजेता एवं उपविजेता टीमों के साथ उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को ट्रॉफी और व्यक्तिगत पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। आयोजकों और समाज के गणमान्य लोगों ने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते हुए युवाओं को खेलों से जोड़ने और प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने पर जोर दिया। समाचार प्रेषकः केसाराम प्रजापत

बारिश की कमी से निपटने को क्लाउड सीडिंग, 3 कमेटियां गठित

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 25 अगस्त 2026। कर्नाटक में बारिश की कमी और आगामी गर्मी के दौरान संभावित जल संकट से निपटने के लिए राज्य सरकार ने क्लाउड सीडिंग की तैयारियां तेज कर दी हैं। जल संसाधन विभाग के माध्यम से प्रस्तावित इस अभियान की निगरानी और तकनीकी मूल्यांकन के लिए तीन अलग-अलग समितियां गठित की जा रही हैं। सरकार अगले दो दिनों में क्लाउड सीडिंग अभियान शुरू करने की तैयारी में है। जल संसाधन मंत्री एन. चालुवरायस्वामी ने मंगलवार को विधान सौधा में आयोजित पत्रकार वार्ता में बताया कि इस संबंध में अब तक दो बैठकें हो चुकी हैं और विभाग के सचिव को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि क्लाउड सीडिंग के लिए निगरानी समिति, तकनीकी समिति तथा फील्ड ऑपरेशन एवं मूल्यांकन समिति गठित की जाएगी। मंत्री के अनुसार निगरानी समिति की जिम्मेदारी विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव को दी जाएगी। तकनीकी समिति में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) और मौसम विभाग के विशेषज्ञों को शामिल किया जाएगा। समितियों के गठन की प्रक्रिया मंगलवार शाम तक पूरी करने का लक्ष्य रखा गया है। सही बादल मिलने पर ही होगा ऑपरेशन चालुवरायस्वामी ने स्पष्ट किया कि क्लाउड सीडिंग कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है जिसे मनचाहे समय और स्थान पर किया जा सके। इसके लिए उपयुक्त और पर्याप्त घने बादलों की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि राज्य के चार राजस्व संभागों में जल संसाधन विभाग के माध्यम से यह अभियान चलाने की योजना है। मंत्री के अनुसार क्लाउड सीडिंग के दौरान संबंधित क्षेत्र में करीब 15 किलोमीटर के दायरे में वर्षा होने की संभावना रहती है। हालांकि वास्तविक परिणाम बादलों की प्रकृति, मौसम की स्थिति और अन्य वैज्ञानिक परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। इसलिए पूरे राज्य में जहां अनुकूल बादल उपलब्ध होंगे, वहीं परिस्थितियों के आधार पर अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि सितंबर में घने बादल मिलने की संभावना अधिक रहती है, जबकि अक्टूबर में ऐसी परिस्थितियां अपेक्षाकृत कम हो सकती हैं। इसी वजह से सरकार मौजूदा समय को क्लाउड सीडिंग के लिए अनुकूल मानते हुए तैयारियां कर रही है। पहले के प्रयासों में 18 से 20 प्रतिशत सफलता जल संसाधन मंत्री ने बताया कि कर्नाटक में इससे पहले तीन बार क्लाउड सीडिंग का प्रयोग किया जा चुका है। उनके अनुसार उन अभियानों में लगभग 18 से 20 प्रतिशत सफलता मिली थी। सरकार का आकलन है कि यदि इस बार सफलता दर करीब 30 प्रतिशत तक पहुंचती है तो परियोजना को आर्थिक रूप से लाभकारी माना जा सकता है। क्लाउड सीडिंग का उद्देश्य वातावरण में मौजूद उपयुक्त बादलों में कृत्रिम रूप से वर्षा की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना है। हालांकि यह तकनीक पूरी तरह मौसम संबंधी परिस्थितियों पर निर्भर करती है और इससे बारिश की गारंटी नहीं होती। यही कारण है कि सरकार ने इस अभियान के लिए तकनीकी विशेषज्ञों की निगरानी और मूल्यांकन को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। 60 दिन तक चलेगा अभियान, 27 करोड़ रुपये खर्च का अनुमान

मंत्री चालुवरायस्वामी के अनुसार प्रस्तावित क्लाउड सीडिंग अभियान करीब 60 दिनों तक चलाया जाएगा। इस दौरान लगभग 200 घंटे का ऑपरेशन किए जाने की योजना है। परियोजना पर करीब 27 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान बताया गया है। ऑपरेशन प्रतिदिन सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक चलाने की योजना है। हालांकि वास्तविक संचालन मौसम और उपयुक्त बादलों की उपलब्धता पर निर्भर करेगा। विभाग की ओर से फील्ड स्तर पर अभियान की निगरानी और उसके परिणामों का मूल्यांकन भी किया जाएगा।

सरकार का तर्क है कि राज्य में बारिश की कमी के कारण आने वाले महीनों में जल उपलब्धता पर दबाव बढ़ सकता है। ऐसे में अभी से वैकल्पिक उपायों की तैयारी करना आवश्यक है, ताकि गर्मियों में पेयजल और कृषि संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में कठिनाई कम हो। पेयजल और कृषि पर सरकार का फोकस

चालुवरायस्वामी ने कहा कि सरकार के लिए आर्थिक खर्च से अधिक महत्वपूर्ण लोगों और पशुओं के लिए पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराना है। उन्होंने कहा कि आगामी गर्मी के दौरान संभावित जल संकट से बचने के लिए अभी से एहतियाती कदम उठाए जा रहे हैं। सरकार सूखे क्षेत्रों में कृषि गतिविधियों को राहत देने के उद्देश्य से जलाशयों, झीलों और नालों में पानी की उपलब्धता बढ़ाने के उपायों पर भी काम कर रही है। मंत्री के अनुसार जल संरक्षण और उपलब्ध जल संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के साथ क्लाउड सीडिंग को एक अतिरिक्त उपाय के तौर पर देखा जा रहा है। विशेषज्ञों की भूमिका अहम क्लाउड सीडिंग जैसे मौसम आधारित अभियान में वैज्ञानिक आकलन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित तकनीकी समिति में आईआईटी, आईआईएससी और मौसम विभाग के विशेषज्ञों को शामिल किया जा रहा है। विशेषज्ञ यह तय करने में मदद करेंगे कि किन परिस्थितियों में क्लाउड सीडिंग की संभावना अधिक प्रभावी हो सकती है। वहीं फील्ड ऑपरेशन एवं मूल्यांकन समिति अभियान के दौरान जमीनी स्तर पर गतिविधियों की निगरानी और परिणामों का आकलन करेगी।

सरकार की योजना के अनुसार आने वाले दिनों में मौसम की स्थिति का लगातार अध्ययन किया जाएगा और उपयुक्त बादल उपलब्ध होने पर ही अभियान चलाया जाएगा। इससे यह स्पष्ट है कि क्लाउड सीडिंग को बारिश का निश्चित विकल्प नहीं, बल्कि वर्षा की कमी से निपटने के लिए एक संभावित तकनीकी उपाय के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा। बैठक में विधायक प्रकाश कोलीवाड़ा के अलावा मौसम विभाग और जल संसाधन विभाग के अधिकारी भी मौजूद रहे। कर्नाटक सरकार का यह कदम ऐसे समय में सामने आया है जब राज्य में वर्षा की स्थिति को लेकर चिंता बनी हुई है। अब अभियान की वास्तविक प्रभावशीलता, मौसम की अनुकूलता और वर्षा में होने वाली वृद्धि पर सभी की नजर रहेगी। प्रस्तावित समितियों की निगरानी में होने वाला यह अभियान राज्य की जल सुरक्षा रणनीति के लिए भी महत्वपूर्ण परीक्षण साबित हो सकता है।

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at "Maruthi"Plaza"", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130 , RNI No. KNHIN/2026/A5540. E-Mail: news@bhaarataarth.com, Website: bhaarataarth.com, Established: 2026